A Daily News Magazine

भोपाल

शनिवार, 05 जुलाई, 2025

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 296, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

अमेरिका के फेर में कहीं रूस जैसा दोस्त न खो दे भारत!

पंकज श्रीवास्तव

भारत-अमेरिका बढ़ती नजदीकियों के बीच यह सवाल उठ रहा है कि क्या भारत अपने पारंपरिक और भरोसेमंद सहयोगी रूस को दूर कर रहा है? भारत और रूस (पूर्व में सोवियत संघ) के बीच की दोस्ती दशकों से वैश्विक मंच पर एक मिसाल रही है। यह संबंध न केवल रणनीतिक और सैन्य सहयोग पर आधारित था, बल्कि वैचारिक एकता और आपसी विश्वास का भी प्रतीक था। लेकिन हाल के वर्षों में, खासकर ऑपरेशन सिंदूर के दौरान, रूस की तटस्थता ने कई सवाल खड़े किए हैं। क्या भारत का अमेरिका की ओर झुकाव इसका कारण है? क्या रूस-यूक्रेन युद्ध में भारत की तटस्थता रूस को खल रही है? कहीं मोदी सरकार की नीतियाँ रूस को पाकिस्तान और चीन की ओर तो नहीं धकेल रही है?

22 अप्रैल 2025 को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में 26 लोग मारे गए। भारत ने इसे पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद माना और 7 मई 2025 को ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया। चार दिन तक चले इस ऑपरेशन में भारत ने पाकिस्तान और पाकिस्तान प्रशासित कश्मीर (PoK) में जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तैयबा, और हिजबुल मुजाहिदीन जैसे आतंकी संगठनों के ठिकानों पर मिसाइल हमले किए। इस दौरान विश्व समुदाय चिंतित रहा, क्योंकि भारत और पाकिस्तान दोनों परमाणु शक्ति संपन्न देश हैं। 10 मई को दोनों देशों ने युद्धविराम की घोषणा की।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दावा किया कि उन्होंने व्यापार प्रतिबंधों की धमकी देकर युद्ध रुकवाया, लेकिन भारत ने इसे खारिज करते हुए कहा कि युद्धविराम दोनों देशों के बीच सीधे समझौते का परिणाम था। इस टकराव में भारत को इसराइल और अफगानिस्तान (तालिबान) को छोड़कर किसी का खुला समर्थन नहीं मिला। सबसे हैरान करने वाली थी रूस की चुप्पी। वह रूस, जो अतीत में हर संकट में भारत के साथ खड़ा रहा, इस बार तटस्थ रहा। रूस ने पहलगाम हमले की निंदा तो की, लेकिन दोनों पक्षों से कूटनीति और संयम की सलाह दी।

हालाँकि रूस की सैन्य तकनीक भारत के लिए महत्वपूर्ण साबित हुई। भारत ने एस-400 ट्रायम्फ मिसाइल सिस्टम का उपयोग किया, जो रूस द्वारा विकसित दुनिया की सबसे उन्नत वायु रक्षा प्रणालियों में से एक है। लेकिन रूस की चुप्पी का कारण क्या था? इसका जवाब हमें रूस-यूक्रेन युद्ध और भारत की बदलती विदेश नीति में मिलता है।

रूस और यूक्रेन के बीच तनाव 2014 से शुरू हुआ, लेकिन 24 फरवरी 2022 को रूस के पूर्ण पैमाने पर आक्रमण के साथ यह खुला युद्ध बन गया। भारत ने इस युद्ध में न तो रूस का खुलकर साथ दिया और न ही पश्चिमी देशों के साथ खड़ा हुआ। भारत ने संयुक्त राष्ट्र में रूस के खिलाफ प्रस्तावों पर वोटिंग से परहेज किया और रियायती दरों पर रूसी तेल का आयात बढ़ाया। साथ ही, भारत ने यूक्रेन को मानवीय सहायता दी और शांति के लिए मध्यस्थता की पेशकश की।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2022 में समरकंद SCO शिखर सम्मेलन में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से कहा, 'यह युद्ध का समय नहीं है।' 2024 में उनकी यूक्रेन यात्रा और राष्ट्रपति वोलोदिमीर ज़ेलेंस्की से मुलाकात ने भारत की तटस्थता को और स्पष्ट किया। भारत की यह नीति राष्ट्रीय हितों और रणनीतिक संतुलन पर आधारित थी, लेकिन यह रूस के लिए खलने वाली बात थी। तो क्या रूस ने ऑपरेशन सिंदूर में तटस्थता अपनाकर भारत को उसी का जवाब दिया?

पिछले कुछ वर्षों में भारत और अमेरिका के बीच संबंधों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। भारत ने क्वाड (Quad: भारत, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया) और I2U2 (भारत, इजरायल, यूएई, अमेरिका) जैसे गठबंधनों में हिस्सा लिया, जो रूस-चीन गठजोड़ के खिलाफ माने जाते हैं। 2016-20 के बीच अमेरिका और फ्रांस से हथियार आयात बढ़ा। 2000 के दशक में भारत के हथियार आयात का 75 प्रतिशत हिस्सा रूस का था, जो 2018 तक घटकर 58 प्रतिशत रह गया।

अमेरिका को भारत के रूस से तेल आयात और एस-400 सौदे पर आपत्ति रही है। अमेरिका ने CAAT-SA (Countering America's Adversaries Through Sanctions Act) के तहत भारत पर प्रतिबंध लगाने की बात की, लेकिन भारत ने अपनी रणनीतिक स्वायत्तता का हवाला दिया। दूसरी ओर, रूस ने पाकिस्तान और चीन के साथ अपनी रणनीतिक साझेदारी बढ़ाई, जो भारत के लिए चिंता का विषय है।

भारत और रूस (सोवियत संघ) के संबंध 1947 में औपचारिक रूप से शुरू हुए, जब भारत आजाद हुआ। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने गुट-निरपेक्षता की नीति अपनाई, लेकिन सोवियत संघ के साथ भारत की वैचारिक और रणनीतिक नजदीकी थी। 1917 की रूसी क्रांति भारतीय नेताओं और क्रांतिकारियों के लिए प्रेरणा बनी। महात्मा गांधी हिंसा के खिलाफ़ थे लेकिन रूसी क्रांति के सामाजिक न्याय के लक्ष्य की सराहना की। वहीं नेहरू ने इसे ऐसी लौ बताया, जिसे बुझाया नहीं जा सकता।

सोवियत संघ ने संयुक्त राष्ट्र में भारत के हितों का पुरजोर समर्थन किया। खासकर कश्मीर मुद्दे पर, उसने 1957, 1962, और 1971 में तीन बार वीटो पावर का इस्तेमाल कर भारत के खिलाफ प्रस्तावों को रोका। इसके अलावा, सोवियत संघ ने भारत की संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता और परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (NSG) में उम्मीदवारी का समर्थन किया।

सोवियत संघ का सबसे बड़ा योगदान 1971 के बांग्लादेश मुक्ति संग्राम में देखा गया। भारत और सोवियत संघ ने 9 अगस्त 1971 को मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किए, जिसने युद्ध की स्थिति में सोवियत सहायता को सुनिश्चित किया।

1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद विश्व व्यवस्था बदल गई। समाजवाद का वैचारिक आधार कमजोर हुआ, और भारत ने अपनी विदेश नीति को नए सिरे से परिभाषित किया। मोदी सरकार के तहत भारत ने अमेरिका के साथ रणनीतिक साझेदारी को बढ़ावा दिया। ट्रम्प ने बार-बार दावा किया कि उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर में युद्धविराम करवाया, जिसका भारत ने खंडन नहीं किया। यह भारत की उस छवि के विपरीत है, जिसमें वह पाकिस्तान के खिलाफ अपने पराक्रम का दावा करता है।

अमेरिका को भारत के रूस से तेल आयात पर भी आपत्ति है। एक प्रस्तावित अमेरिकी बिल रूस से व्यापार करने वालों पर 500 प्रतिशत टैक्स की बात करता है, जिसे ट्रम्प का समर्थन प्राप्त है।

दूसरी ओर, भारत BRICS और SCO जैसे मंचों पर रूस के साथ सक्रिय है। 2024 में पीएम मोदी की रूस यात्रा और पुतिन के साथ मुलाक़ात भी की लेकिन वैश्विक मंच पर भारत का पलड़ा अमेरिका की ओर झुकता दिख रहा है।

भारत अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखना चाहता है, लेकिन रूस जैसा पुराना दोस्त खोना विदेश नीति में बरसों की कमाई को गंवाने जैसा होगा।

(सत्य हिंदी डॉट कॉम पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

हमारे आपसी रिश्ते भौगोलिक सीमाओं से परे हैं: पीएम मोदी

प्रधानमंत्री बोले-त्रिनिनाद की प्रधानमंत्री कमला बिहार की बेटी

पोर्ट ऑफ स्पेन (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार तड़के त्रिनिदाद और टोबैगो में भारतीय समुदाय को संबोधित किया। उन्होंने पीएम कमला प्रसाद बिसेसर को 'बिहार की बेटी' कहा और उन्हें राम मंदिर का मॉडल और सरयू नदी के जल के साथ-साथ प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ का जल भी भेंट किया। पीएम मोदी ने भारतीय समुदाय की यात्रा को साहस की मिसाल बताया। पीएम ने कहा- वे (भारतीय प्रवासी) गंगा और यमुना को पीछे छोड़ आए, लेकिन अपने दिल में रामायण को साथ लाए।

उनके योगदान ने इस देश को सांस्कृतिक, आर्थिक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध किया है। वे अपनी मिट्टी छोड़ आए, लेकिन अपने संस्कार नहीं छोड़े। वे सिर्फ प्रवासी नहीं थे, बल्कि एक सभ्यता के दूत थे। पीएम मोदी ने ऐलान किया कि भारतीय मूल के लोगों की छठी पीढ़ी को भी ओवरसीज सिटीजन ऑफ इंडिया कार्ड दिया जाएगा।

पीएम मोदी ने कहा- 25 साल पहले मैं यहां आया था। तब से अब तक हमारी दोस्ती और मजबूत हुई है। बनारस, पटना, कोलकाता और दिल्ली भारत के शहर हैं, लेकिन यहां भी इनके नाम की सड़कें हैं। नवरात्रि, महाशिवरात्रि और जन्माष्टमी यहां खुशी, उत्साह और गर्व के साथ मनाए जाते हैं। चौताल और भटक गाना यहां फल-फूल रहे हैं। मैं यहां कई परिचित चेहरों की गर्मजोशी और युवा पीढ़ी की आंखों में उत्सुकता देखता हूं, जो एक साथ जानने और बढ़ने के लिए उत्साहित हैं। हमारे रिश्ते भौगोलिक सीमाओं से परे हैं। पीएम मोदी ने भारतीय समुदाय की श्रीराम के लिए गहरी आस्था की तारीफ की। उन्होंने कहा- मुझे आपकी प्रभु श्रीराम में गहरी आस्था का पता है। यहां की रामलीला वाकई अनोखी है। मुझे यकीन है कि आप सभी ने 500 साल बाद अयोध्या में रामलला की वापसी का स्वागत किया होगा। आपने अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के लिए पवित्र जल और शिला भेजी थी।

पीएम कमला को लोग बिहार की बेटी मानते हैं

मोदी ने इस साल हुए महाकुंभ का जिक्र करते हुए कहा, मैं महाकुंभ का पवित्र जल अपने साथ लाया हूं। मैं कमला जी से अपील करता हूं कि वे संगम और सरयू नदी के पवित्र जल को यहां की गंगा धारा में अर्पित करें। भारतीय प्रवासी हमारा गर्व हैं। आप में से प्रत्येक भारत के मूल्यों और विरासत का राजदूत है। पीएम मोदी ने कहा- हम सिर्फ खून या सरनेम से नहीं, बल्कि अपनेपन की भावना से जुड़े हैं। भारत आपकी ओर देखता है और आपका स्वागत करता है। पीएम कमला जी के पूर्वज बिहार के बक्सर से थे।

मुख्यमंत्री ने किया 94234 विद्यार्थियों को लैपटॉप क्रय के लिए 235 करोड़ रुपए प्रोत्साहन राशि का अंतरण

सबको शिक्षा ही हमारा विकास मंत्र : सीएम

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि शिक्षा मनुष्य के समग्र विकास की धुरी है और 'सबको शिक्षा' ही राज्य सरकार का विकास मंत्र है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने प्रदेश के हर बच्चे तक शिक्षा का प्रकाश पहुंचाने के हरसंभव प्रयास किए हैं। केवल पढ़ाई ही नहीं, बल्कि प्रतिभावान विद्यार्थियों को नई तकनीक और नई शिक्षा पद्धति से जोड़कर उनके उज्जवल भविष्य की नींव भी रखी जा रही है। प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को लैपटॉप देकर हम प्रदेश का एक बेहतर और स्वर्णिम भविष्य गढ़ने जा रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को भोपाल के कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में लैपटॉप प्रोत्साहन राशि अंतरण के राज्य स्तरीय समारोह को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शैक्षणिक सत्र 2024-25 में कक्षा 12वीं में 75 प्रतिशत या इससे अधिक अंक लाने वाले प्रदेश के 94,234 मेधावी विद्यार्थियों को लैपटॉप क्रय करने के लिए 235 करोड़ रुपये से अधिक की राशि अंतरित की। योजना के तहत लैपटॉप खरीदने के लिए प्रत्येक पात्र विद्यार्थी को 25-25 हजार रुपये डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (डीबीटी) के जरिए उनके बैंक खातों में सिंगल क्लिक के जरिए हस्तांतरित किये गये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अगले साल से प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को प्रोत्साहन राशि के स्थान पर 25 हजार रुपए मूल्य के और अधिक गुणवत्ता वाले अपडेटेड लैपटॉप देने की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने मंच से 15 मेधावी विद्यार्थियों को लेपटॉप भी वितरित किए। मुख्यमंत्री ने खुद सेल्फी लेकर सभी बच्चों का उत्साहवर्धन भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अब हमारे विद्यार्थी आधुनिक तकनीक से लैस होकर बेहतर तरीके से पढ़ाई कर सकेंगे। लैपटॉप सिर्फ एक उपकरण नहीं, बल्कि यह सुनहरे भविष्य की तैयारी का सशक्त माध्यम है। नई विधाएं, नए कौशल और नई सोच के साथ हमारे बच्चे अब प्रतिस्पर्धा की दौड़ में और भी आगे बढ़ सकेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सरकार द्वारा विद्यार्थियों को कापी-किताबें, गणवेश, सायकिल और स्कूटी भी दिलाई गई है और अब हम लैपटॉप भी दे रहे हैं। यह कदम विद्यार्थियों को डिजिटल एवं आधुनिक शिक्षा से जोड़ने में बेहद मददगार सिद्ध होगा।

शासकीय स्कूलों का परीक्षा परिणाम निजी स्कूलों से रहा अधिक

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश सरकार स्कूल शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रही है और शासकीय स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि इस वर्ष शासकीय स्कूलों में बोर्ड परीक्षा का रिजल्ट 52 प्रतिशत और निजी स्कूलों में 48 प्रतिशत रहा है। वर्ष 2025 में सरकारी स्कूलों के लगभग 49 हजार और निजी स्कूलों के 44 हजार से अधिक विद्यार्थियों को प्रोत्साहन योजना के तहत लैपटॉप का लाभ मिला है।

सुप्रभात

खुद संभल जाने का मौक़ा
हाथ से खोने के बाद,
अक्ल आती है हमेशा
हादसा होने के बाद।
इक पराई आग में
झुलसा के अपने हाथ मैं
हँस रही हूं आजकल,
इक उम्र तक रोने के बाद।
मुत्मईन थी मैं तेरी
आवाज़ पर इस हद तलक़
आ गई मुड़कर गली के
आखिरी कोने के बाद।
आज़माइश सब्र की होती है
क्या ख़ुद देख लो
कोंपलें उगने से पहले,
बीज को बोने के बाद।
ज़िंदगी मैं हूं तेरी मज़दूर
ऐसी जिससे रोज़
छीन लेता है कोई उजरत
वज़न ढोने के बाद।
अपनी ही सच्चाइयों से
भागने की है थकन।
नींद रहती है अधूरी रात
भर सोने के बाद।
ये बुझी रंगत नतीजा है
तेरी नीयत का दोस्त
ये नहीं बदलेगी तेरे
कितना भी धोने के बाद।

– मनस्वी अपर्णा

मॉनसून से तबाही शुरू, बादल फटने से बाढ़

भारी बारिश और आंधी-तूफान का अलर्ट जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के कई हिस्सों में मॉनसून दस्तक दे चुका है और बारिश का सिलसिला लगातार जारी है। बरसात और आंधी-तूफान का दौर अभी जारी रहने वाला है। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने शुक्रवार को आंधी-तूफान के साथ बारिश का अनुमान व्यक्त किया है। अधिकतम तापमान के 37 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान के 27 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना जताई है। दिल्ली में गुरुवार को अधिकतम तापमान 36.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो मौसम के औसत तापमान से 0.8 डिग्री कम है। राष्ट्रीय राजधानी में न्यूनतम तापमान 27.7 डिग्री सेल्सियस रहा। मौसम विभाग ने आंधी-तूफान के साथ बारिश होने की संभावना जताई। राजस्थान में मॉनसून की बारिश का दूसरा दौर जारी है जहां गुरुवार को कई जगह मूसलाधार बरसात हुई। मौसम केंद्र के अनुसार सबसे अधिक 136.5 मिलीमीटर बारिश जालौर में दर्ज की गई। लगातार और भारी बारिश से कई जगह जनजीवन प्रभावित हुआ है। खासकर पूर्वी राजस्थान के अनेक जिलों में लगातार बारिश हो रही है। इससे कई शहरों-कस्बों में निचले स्थानों पर जलभराव देखने को मिला जिससे जनजीवन प्रभावित हुआ। मौसम विभाग के जयपुर केंद्र के अनुसार, पूर्वी राजस्थान के कोटा, अजमेर, जयपुर, भरतपुर, उदयपुर संभाग के कुछ भागों में आगामी चार-पांच दिन बारिश की गतिविधियां जारी रहने व कहीं-कहीं भारी से अतिभारी बारिश होने की संभावना है।

मथुरा के शाही ईदगाह पर हिंदू पक्ष को 'हाई' झटका

मस्जिद को विवादित ढांचा घोषित करने से किया इनकार

मथुरा (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मथुरा में शाही ईदगाह मामले में इलाहाबाद हाई कोर्ट का बड़ा फैसला आया है। कोर्ट ने मस्जिद को विवादित ढांचा घोषित करने से इनकार कर दिया है। हिंदू पक्ष को झटका लगा है। जस्टिस राम मनोहर नारायण मिश्र की बेंच ने यह फैसला सुनाया है। हिंदू पक्षकार महेंद्र प्रताप सिंह एडवोकेट ने कोर्ट से मस्जिद को विवादित ढांचा घोषित करने की मांग की थी, जिस पर कोर्ट ने अपना फैसला सुरक्षित कर लिया था। इलाहाबाद हाईकोर्ट में मथुरा शाही ईदगाह और श्रीकृष्णजन्मभूमि विवाद मामले में आज फैसले पर सबकी नजर थी। अदालत ने हिंदू पक्ष को झटका देते हुए अर्जी खारिज कर दी है। इसमें मस्जिद को विवादित ढांचा घोषित करने की याचिका खारिज कर दी गई है। हिंदू पक्षकार महेंद्र प्रताप सिंह ने मासरे आलम गिरी से लेकर मथुरा के कलेक्टर रहे एफएस ग्राउस तक के समय में लिखी गई इतिहास की पुस्तकों का हवाला दिया था। उन्होंने कहा था कि वहां पहले मंदिर था और मस्जिद होने का कोई साक्ष्य शाही ईदगाह मस्जिद पक्ष न्यायालय में पेश नहीं कर सका है।

हिंदू पक्षकार महेंद्र प्रताप सिंह एडवोकेट ने इतिहास की पुस्तकों का हवाला देते हुए कहा था कि वहां पहले मंदिर था। उन्होंने कहा, वहां पर मस्जिद होने का कोई साक्ष्य आज तक शाही ईदगाह मस्जिद पक्ष न्यायालय में पेश नहीं कर सका। न खसरा खतौनी में मस्जिद का नाम है, न नगर निगम में उसका कोई रिकॉर्ड। न कोई टैक्स दिया जा रहा, बिजली चोरी की रिपोर्ट भी शाही ईदगाह प्रबंध कमेटी के खिलाफ भी हो चुकी है, फिर इसे मस्जिद क्यों कहा जाए। इसलिए मस्जिद को विवादित ढांचा घोषित किया जाए। श्रीकृष्ण जन्मभूमि एवं शाही ईदगाह मस्जिद केस के मंदिर पक्षकार महेंद्र प्रताप सिंह एडवोकेट ने हाई कोर्ट में 5 मार्च 2025 को मथुरा स्थित शाही ईदगाह मस्जिद को विवादित ढांचा घोषित किए जाने की मांग करते हुए प्रार्थना पत्र दाखिल किया था। न्यायाधीश राम मनोहर नारायण मिश्र के न्यायालय में इस प्रार्थना पत्र पर बहस पूरी हो चुकी है। बहस के दौरान सभी हिन्दू पक्षकारों ने महेंद्र प्रताप सिंह की दलीलों का समर्थन किया।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 05 जुलाई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

इस महीने भारत को 3 अपाचे हेलीकॉप्टर देगा यूएसए

हवा में बन जाते हैं दुश्मन का काल,रेगिस्तानी क्षेत्रों में होगी तैनाती

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना को अपनी युद्ध क्षमता को और मजबूत करने के लिए इस महीने अमेरिका से तीन अपाचे एएच-64ई हमलावर हेलीकॉप्टरों का पहला बैच मिलने वाला है। यह डिलीवरी 15 महीने से अधिक की देरी के बाद हो रही है। देरी के पीछे सप्लाई चैन में व्यवधान और तकनीकी मुद्दे अहम कारण हैं। रक्षा मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार, ये हेलीकॉप्टर 15 जुलाई तक भारत पहुंचने की उम्मीद है, जबकि शेष तीन हेलीकॉप्टर नवंबर 2025 तक डिलीवर किए जाएंगे।

2020 में भारत और अमेरिका के बीच 600 मिलियन डॉलर (लगभग 5691 करोड़ रुपये) के सौदे के तहत छह अपाचे हेलीकॉप्टरों की खरीद के लिए समझौता हुआ था। इन हेलीकॉप्टरों को भारतीय सेना के एविएशन कॉर्प्स के लिए खरीदा गया है जो पश्चिमी सीमा, विशेष रूप से पाकिस्तान के साथ लगने वाली सीमा पर तैनात किए जाएंगे। इन हेलीकॉप्टरों को जोधपुर, राजस्थान में 451 एविएशन स्क्वाड्रन में शामिल किया जाएगा, जिसे मार्च 2024 में विशेष रूप से अपाचे हेलीकॉप्टरों के संचालन के लिए स्थापित किया गया था। अपाचे एएच-64ई हेलीकॉप्टर को 'हवा में टैंक' के रूप में भी जाना जाता है। यह अपनी चपलता, अग्निशक्ति, और एडवांस निशानेबाजी प्रणालियों के लिए प्रसिद्ध हैं।

ये हेलीकॉप्टर हेलफायर प्रिसिजन-स्ट्राइक मिसाइलों, हवा से हवा में मार करने वाली स्टिंगर मिसाइलों, और 30 मिमी ऑटोमैटिक तोप से लैस हैं।

भारतीय सेना की एविएशन कॉर्प्स की बढ़ती ताकत

अपाचे हेलीकॉप्टरों का आगमन भारतीय सेना के एविएशन कॉर्प्स के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है, जो पहले से ही स्वदेशी लाइट कॉम्बैट हेलीकॉप्टर (एलसीएच) प्रचंड को शामिल कर चुका है। प्रचंड को विशेष रूप से ऊंचाई वाले क्षेत्रों, जैसे लद्दाख और सियाचिन ग्लेशियर, में संचालन के लिए डिजाइन किया गया है, जहां अपाचे हेलीकॉप्टरों को कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। रक्षा अधिग्रहण परिषद ने 156 प्रचंड हेलीकॉप्टरों की खरीद को मंजूरी दी है, जिनमें से 90 सेना और 66 वायुसेना के लिए हैं, जिससे भारत की स्वदेशी रक्षा क्षमताओं को और बढ़ावा मिलेगा।

अमेरिका ने भारतीय कंपनी पर लगाया सख्त प्रतिबंध

- ईरान से तेल व्यापार करने की दी सजा,पाक भी लपेटे में

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका ने ईरान से तेल और पेट्रोकेमिकल व्यापार में शामिल छह कंपनियों और कई जहाजों पर प्रतिबंध लगाए हैं।

इनमें भारत और पाकिस्तान की एक-एक फर्म भी शामिल है। यह कार्रवाई अमेरिका की उस नीति का हिस्सा है, जिसके तहत वह ईरान पर आर्थिक दबाव बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। यह जानकारी अमेरिकी विदेश मंत्रालय और ट्रेजरी विभाग के ऑफिस ऑफ फॉरेन एसेट्स कंट्रोल ने दी।

रूस ने अफगानिस्तान में तालिबान सरकार को दी मान्यता

- ऐसा करने वाला दुनिया का पहला देश,तालिबान ने फैसले को बहादुरी भरा बताया

काबुल/मॉस्को (एजेंसी)। अफगानिस्तान में तालिबान की सत्ता को रूस ने आधिकारिक मान्यता दे दी है। ऐसा करने वाला रूस दुनिया का पहला देश बन गया है। यह घोषणा गुरुवार को काबुल में अफगान विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी और अफगानिस्तान में रूस के राजदूत दिमित्री झिरनोव के बीच हुई बैठक के बाद की गई। तालिबान सरकार ने रूस के इस कदम को बहादुरी भरा फैसला बताया है। मुत्ताकी ने बैठक के बाद जारी एक वीडियो बयान में कहा, यह साहसी फैसला दूसरों के लिए एक मिसाल बनेगा। अब मान्यता की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है, रूस सबसे आगे रहा। तालिबान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता जिया अहमद तकाल ने भी मान्यता की पुष्टि करते हुए कहा कि रूस पहला देश है जिसने इस्लामिक अमीरात को आधिकारिक मान्यता दी है।

जासूसी विमान से युद्धपोत तक, बड़े सौदे की तैयारी

सेनाओं को मिलेंगे आधुनिक हथियार,चीन-पाक गठजोड़ को जवाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत सरकार ने रक्षा क्षेत्र में अपनी ताकत को और मजबूत करने के लिए 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक के रक्षा सौदों को मंजूरी दी है। इन सौदों में जासूसी विमानों से लेकर एडवांस एंटी-माइन्स युद्धपोतों, क्विक रिएक्शन सतह-से-हवा मिसाइल प्रणालियों, और अर्ध-पनडुब्बी स्वायत्त पोतों तक कई घातक हथियार शामिल हैं। ये मंजूरियां रक्षा मंत्रालय की ओर से दी गई हैं और इनका उद्देश्य भारतीय सेनाओं की निगरानी, हमले और रक्षा क्षमताओं को बढ़ाना है। चीन और पाकिस्तान की बढ़ती समुद्री और हवाई चुनौतियों के जवाब में भारत की ओर से ये मंजूरी एक बड़ा कदम मानी जा रही है। इसके अलावा, यह कदम भारत की रक्षा नीति में स्वदेशीकरण और आधुनिकीकरण को बढ़ावा देने की दिशा में भी एक बड़ा कदम है।

रिपोर्ट के मुताबिक, भारतीय नौसेना के लिए 12 स्वदेशी खदानरोधी युद्धपोतों के निर्माण को मंजूरी दी गई है। इसकी लागत लगभग 44,000 करोड़ रुपये है और इसे माइन काउंटरमेजर वेसल भी कहा जाता है। ये युद्धपोत 900-1,000 टन वजन के होंगे और इनमें दुश्मन द्वारा बिछाई गई समुद्री माइनों को खोजने, ट्रैक करने और नष्ट करने की क्षमता होगी। ये माइन्स बंदरगाहों, तटों और समुद्री व्यापार मार्गों को बाधित करने के लिए इस्तेमाल की जाती हैं। वर्तमान में भारतीय नौसेना के पास कोई समर्पित पोत नहीं है, और यह कमी चीन और पाकिस्तान की समुद्री गतिविधियों के मद्देनजर एक बड़ा खतरा बन चुकी है। नौसेना वर्तमान में कुछ जहाजों पर क्लिप-ऑन माइन काउंटरमेजर सूट का उपयोग करती है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष चुनने के बाद यूपी का फैसला करेगी बीजेपी

- एक नेता पर नहीं बन पा रही सहमति,योगी सरकार में भी फेरबदल के चर्चे

लखनऊ (एजेंसी)। महाराष्ट्र, बिहार, मध्य प्रदेश, हिमाचल और उत्तराखंड समेत 22 राज्यों में भाजपा ने अपने प्रदेश अध्यक्षों का ऐलान कर दिया है। अब भी देश की सबसे ज्यादा लोकसभा सीटों वाले राज्य उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष पर कोई फैसला नहीं हो पाया है। इस बीच चर्चा है कि यूपी के भाजपा अध्यक्ष के चुनाव में और देरी होगी क्योंकि किसी एक नेता के नाम पर सहमति बन पा रही है। इसकी वजह सामाजिक और क्षेत्रीय समीकरण साधना भी है। भाजपा को लगता है कि एक ऐसे नेता को अध्यक्ष बनाया जाए, जिससे सपा के पीडीए की काट हो सके लेकिन एक चिंता यह भी है कि ब्राह्मण समाज सपा से नाराजगी का भी लाभ उठा लिया जाए, जो इटावा प्रकरण से आहत बताया जा रहा है। भाजपा सूत्रों का कहना है कि ऐसी स्थिति में राष्ट्रीय अध्यक्ष तय होने के बाद भी प्रदेश यूनिट पर फैसला हो सकता है। इसकी वजह है कि राष्ट्रीय अध्यक्ष के इलेक्शन के लिए कम से कम आधे राज्यों में प्रदेश अध्यक्ष का चुनाव हो जाना चाहिए। कुल 37 प्रदेश यूनिट्स भाजपा ने देश भर में बना रखी हैं, जिनमें से 22 का चुनाव हो गया है। ऐसी स्थिति में कोरम पूरा है और कभी भी राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव कराया जा सकता है। इसीलिए यूपी अध्यक्ष चुनने के लिए नेतृत्व वक्त भी ले सकता है।

ईरान पर 12 दिनों तक हमले के बाद भी इजरायल खाली हाथ

- खामेनेई को झुका नहीं पाया, क्या बैकफायर कर गया नेतन्याहू का दांव!

तेल अवीव (एजेंसी)। इजरायल ने 13 जून को जब ईरान पर बड़े पैमाने पर हवाई हमला बोल दिया था, जिसके बाद दोनों के बीच 12 दिनों तक भीषण जंग चली। इस दौरान इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई के शासन का अंत करने और ईरानी परमाणु स्थलों को नष्ट करने की बात कही थी। अब युद्ध खत्म होने के बाद सवाल उठता है कि क्या इजरायल इस युद्ध में अपने लक्ष्यों को हासिल करने में सफल रहा। अमेरिका स्थित पत्रिका फॉरेन पॉलिसी ने इस जंग को 'असफल जुआ' बताया है।

12 घंटे की शिफ्ट, नाइट शिफ्ट में काम कर सकेंगी महिलाएं

- गुजरात में फैक्ट्री ऐक्ट में बड़े संशोधन,अध्यादेश कर दिया जारी

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात में मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल की अगुवाई वाली राज्य सरकार ने फैक्ट्री एक्ट में संशोधन करके महिलाओं को नाइट शिफ्ट में काम करने की स्वीकृति दे दी है। इसके साथ सरकार ने काम के घंटों में भी बढ़ोतरी कर दी है। राज्य सरकार के इन फैसलों को गुजरात में आर्थिक गतिविधियों को तेज करने से जोड़कर देखा जा रहा है। गुजरात सरकार ने फैक्ट्रीज (गुजरात संशोधन) अध्यादेश, 2025 जारी किया है, जिसमें फैक्ट्रीज एक्ट, 1948 में संशोधन किया गया है।

अमृतसर पुलिस ने अंतरराष्ट्रीय ड्रग-हथियार गिरोह पकड़ा

- हेरोइन, 5 पिस्तौल और 9.7 लाख ड्रग मनी जब्त; 9 गिरफ्तार

अमृतसर (एजेंसी)। अमृतसर में पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए दो गैंग का पर्दाफाश किया है। एक गैंग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नशा और हथियार तस्करी में शामिल था, जबकि दूसरा अंतरराज्यीय ड्रग्स और हवाला से जुड़ा हुआ था। इन दोनों मामलों में पुलिस ने कुल 9 लोगों को गिरफ्तार किया है। उनके पास से 1.15 किलो हेरोइन, 5 पिस्तौल (जिसमें 3 ग्लॉक 9 एमएम और 2 चीनी पिस्तौल हैं), कारतूस और 9.7 लाख रुपए की ड्रग मनी बरामद हुई है।

कोलकाता केस में पुलिस ने किया क्राइम सीन रीक्रिएट

सुबह 4.30 बजे आरोपियों को लेकर कॉलेज पहुंची,25 जून को हुई थी घटना

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता पुलिस ने शुक्रवार को लॉ कॉलेज स्टूडेंट से गैंगरेप की जांच के सिलसिले में क्राइम सीन रीक्रिएट किया। पुलिस गिरफ्तार किए गए चारों आरोपियों के साथ साउथ कलकत्ता लॉ कॉलेज पहुंची थी। तीनों मुख्य आरोपियों मोनोजीत मिश्रा, मौजूदा स्टूडेंट प्रमित मुखर्जी और जैब अहमद और सुरक्षा गार्ड पिनाकी बनर्जी को सुबह करीब 4.30 बजे कॉलेज ले जाया गया। इस प्रक्रिया को पूरा करने में करीब चार घंटे लगे। इसके बाद सभी को पुलिस स्टेशन वापस लाया गया। पुलिस के अफसर ने बताया कि जो नतीजे मिले हैं, उनसे अब महिला के आरोपों से जांच की जाएगी और बाकी सबूतों से पुष्टि की जाएगी।

सुरक्षा गार्ड पिनाकी को दोपहर बाद अदालत में पेश किया जाएगा, क्योंकि उसकी पुलिस रिमांड 4 जुलाई तक है। मामले की जांच फिलहाल कोलकाता पुलिस का डिटेक्टिव डिपार्टमेंट कर रहा है। घटना 25 जून को पश्चिम बंगाल की राजधानी के कस्बा क्षेत्र में साउथ कलकत्ता लॉ कॉलेज में हुई।

- उप सेना प्रमुख बोले-दुश्मनों ने देखी 'ऑपरेशन सिंदूर' की धमक

एक बॉर्डर, तीन दुश्मन, हमने तीनों को हराया

कहा-चीन ने हमें हथियारों की टेस्टिंग लैब समझा,तुर्किये ने ड्रोन दिए

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर को लेकर भारतीय सेना के उप प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल राहुल आर सिंह ने बड़ा खुलासा किया है। उप सेना प्रमुख ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान चीन पाकिस्तान को लाइव इनपुट दे रहा था। साथ ही चीन ने पाकिस्तान को भारतीय हथियारों के बारे में जानकारी दी। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान तुर्की के ड्रोन और पायलट पाकिस्तान में मौजूद थे। डीजीएमओ वार्ता के दौरान चीन पाकिस्तान को जानकारी दे रहा था। उन्होंने कहा कि हमने एक साथ तीन दुश्मनों को मात दी। उप सेना प्रमुख (क्षमता विकास एवं संधारण) लेफ्टिनेंट जनरल राहुल आर सिंह फिक्की की तरफ से आयोजित न्यू एज मिलिट्री टेक्नोलॉजीज कार्यक्रम में बोल रहे थे। उप सेना प्रमुख सिंह ने कहा कि पूरे अभियान के दौरान वायु रक्षा और उसका संचालन महत्वपूर्ण था। इस बार, हमारे जनसंख्या केंद्रों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया, लेकिन अगली बार, हमें इसके लिए तैयार रहना होगा। उन्होंने कहा कि हमारे पास एक सीमा थी और दो विरोधी थे, वास्तव में तीन। हमें बहुत तेजी से आगे बढ़ना होगा। हम इजराइल को देख रहे हैं। उनके पास आयरन डोम हैं। दूसरे एयर डिफेंस सिस्टम हैं। हमारे पास वैसी सुविधाएं नहीं है क्योंकि हमारा देश विशाल है और इन पर बहुत पैसा खर्च होता है।

पिछले युद्धों की तरह दर्द बर्दाश्त नहीं कर सकते थे

लेफ्टिनेंट जनरल राहुल आर सिंह ने पाकिस्तान और पीओके में आतंकी ठिकानों पर सटीक हमले करने के लिए भारतीय सशस्त्र बलों की भी तारीफ की। साथ ही टारगेट चुनने, प्लानिंग के अलावा रणनीतिक संदेश, टेक्नोलॉजी और ह्यूमन इंटेलीजेंस के इस्तेमाल के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा- ऑपरेशन सिंदूर से कुछ सबक मिले हैं। लीडरशिप का संदेश साफ था। जिस तरह से हमने कुछ साल पहले बर्दाश्त किया, उस तरह से दर्द को सहने की कोई गुंजाइश नहीं थी।

2 बार बीएलओ घर जाएगा, नहीं मिले तो कट जाएगा आपका नाम

- बिहार में चुनाव आयोग की वोटर लिस्ट पुनरीक्षण पर संग्राम

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव से पहले चुनाव आयोग की ओर से कराए जा रहे वोटर लिस्ट पुनरीक्षण को रोकने के लिए कांग्रेस पार्टी ने कमर कस ली है। बिहार कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष राजेश कुमार ने कहा कि 14 पार्टियों ने मिलकर चुनाव आयोग के सामने अपनी बात रखी है। इस दौरान बिहार के लोगों की भावनाओं के बारे में बताया गया। जिस तरह से यहां 25 दिनों की प्रक्रिया में जो पूरी इलेक्ट्रो प्रोसेस को प्रभावित करने का जो चुनाव आयोग का निर्णय है उसका हम लोगों ने विरोध जताया। इलेक्शन कमीशन ने कहा कि हम वोटर लिस्ट का पूर्ण पुनरीक्षण नहीं कर रहे हैं। लेकिन आज की डेट में पिछली बार इलेक्शन कमीशन ने जो प्रिंट किया उसे खारिज करके उसे पूरी तरह से नये सिरे से वोटर लिस्ट तैयार किया जा रहा है हम उसी के रिप्रजेंटेशन में गए थे। इलेक्शन कमीशन का जो रवैया है उसमें हमें तीन बातें मुख्य रूप से बताया गया। इससे साफ जाहिर है कि 20 फीसदी वोटर लिस्ट से हट जाएंगे। ये उन्होंने स्पष्ट तौर से कहा।

एस्ट्रोनॉट शुभांशु बोले-उड़ने का डर, खुद को बांधकर सोता हूं

इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन से छात्रों से की बात,कहा-रोज योग करता हूं

लखनऊ (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन पर पहुंचने वाले भारत के पहले अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला ने गुरुवार को उत्तर प्रदेश और केरल के छात्रों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए बातचीत की। इस दौरान छात्रों ने अंतरिक्ष में जीवन से जुड़े कई सवाल पूछे, जिनके शुक्ला ने डिटेल में जवाब दिए।

इस दौरान उन्होंने जीरो ग्रैविटी में तैरते हुए गेंद से खेलकर दिखाया। छात्रों ने पूछा- अंतरिक्ष में कैसे सोते हैं। जवाब में शुक्ला ने बताया- अंतरिक्ष में फर्श या छत जैसी कोई चीज नहीं होती, इसलिए कोई दीवार पर सोता है तो कोई छत पर।

सोते समय खुद को बांधना पड़ता है ताकि तैरते हुए कहीं और न चले जाएं। यूपी के 150 बच्चों और केरल के कोझिकोड जिले के छात्रों को बातचीत के लिए चुना गया था। भारतीय वायु सेना के ग्रुप कैप्टन शुभांशु 26 जून को इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पहुंचे हैं। वे 41 साल बाद स्पेस में जाने वाले भारतीय हैं। वे एक्सियम मिशन- 4 के तहत 25 जून को दोपहर करीब 12 बजे सभी एस्ट्रोनॉट के साथ स्पेस के लिए रवाना हुए थे और 10 जुलाई को धरती पर वापस आएंगे। छात्रों ने शुभांशु शुक्ला से बातचीत को बेहद प्रेरणादायक बताया।

एफ-35 जेट को केरल से ले जाना पड़ रहा भारी

- आसान नहीं राह, अमेरिकी इंजीनियरों के छूटेंगे पसीने

नई दिल्ली (एजेंसी)। ब्रिटेन का एफ-35 बी फाइटर जेट 14 जून को तिरुवनंतपुरम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर इमरजेंसी लैंडिंग के बाद से केरल में खड़ा है। मरम्मत की तमाम कोशिशें नाकाम होने के बाद जेट के कुछ हिस्सों को खोलकर सी-17 ग्लोबमास्टर जैसे विशाल विमान से ले जाए जाने की तैयारी की खबरें हैं। हालांकि, स्टील्थ टेक्नोलॉजी वाले पांचवीं पीढ़ी के इस लड़ाकू विमान को ब्रिटिश रॉयल नेवी के लिए ले जाना आसान नहीं होगा। विमान को सी-17 में ले जाने में भी कई चुनौतियां हैं, जैसे विमान का आकार और इसकी स्टील्थ टेक्नोलॉजी वाले डेटा की सुरक्षा का खतरा। क्योंकि, विमान को ले जाने से पहले उसके पंखों को निकालना जरूरी होगा। ऐसे में आशंका जताई जा रही है कि इसकी स्टील्थ टेक्नोलॉजी का सीक्रेट कोड डिकोड हो सकता है, जिससे यह विमान अपनी गोपनीय ताकत खो देगा। सी-17 ग्लोबमास्टर एक बड़ा सैन्य विमान है।

विक्रमोत्सव 2025 को मिला एशिया का वाउ गोल्ड अवॉर्ड

भोपाल। मध्यप्रदेश शासन के संस्कृति विभाग अंतर्गत महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा आयोजित विक्रमोत्सव 2025 को वाउ अवार्ड एशिया 2025 द्वारा एशिया के शासकीय समारोह की विशेष श्रेणी में गोल्ड अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है। डब्ल्यूओडब्ल्यू अवॉर्ड एशिया की टीम भोपाल आकर माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को यह अवॉर्ड प्रदान करेंगी। विगत वर्ष विक्रमोत्सव 2024 को एशिया का बिगेस्ट रिलीजियस अवॉर्ड मिल चुका है।

विक्रमोत्सव 2025 को यह सम्मान मिलने पर माननीय मुख्यमंत्रीजी के संस्कृति सलाहकार एवं महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी ने इसे माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की संस्कृति और विरासत के प्रति उनके समर्पण का परिणाम बताया। उन्होंने कहा कि विक्रमोत्सव 2025 को प्राप्त यह सम्मान न केवल मध्य प्रदेश बल्कि समस्त भारतवर्ष के लिए गौरव का विषय है। विक्रमोत्सव एक आयोजन मात्र नहीं है बल्कि इन सबसे बढ़कर संस्कृति, विरासत और विकास का बेजोड़ संगम हैं। बीते 18 वर्षों से निरंतर विक्रमोत्सव का आयोजन किया जाता रहा है। विगम वर्षों में विक्रमोत्सव ने देश के सांस्कृतिक क्षेत्र में अपनी उत्सवधर्मी पहचान को बखूबी स्थानपित किया है। इसमें ना केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय भागीदारी भी शामिल है। उल्लेखनीय है कि डब्ल्यूओडब्ल्यू एवार्ड एशिया वर्ष 2009 से लाइव इवेंट्स के क्षेत्र में उत्कृष्टता और नवाचार को प्रोत्साहित करने वाला एक प्रतिष्ठित मंच रहा है। यह आयोजन अनुभव आधारित विपणन, व्यापारिक बैठकों, प्रोत्साहन यात्राओं, सम्मेलनों, प्रदर्शनियों, सजीव मनोरंजन तथा विवाह उद्योग जैसे क्षेत्रों में कार्यरत संस्थाओं और आयोजनों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्रदान करता है। इस वर्ष इसका 16वाँ संस्करण, दिनांक 20 और 21 जून 2025 को मुंबई स्थित जियो वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर में भव्य रूप से आयोजित किया गया, जिसमें देश-विदेश की प्रतिष्ठित संस्थाओं ने सहभागिता की।

विक्रमोत्सव 2025 में 300 से अधिक गतिविधियाँ हुई आयोजित

विक्रमोत्सव 2025 अंतर्गत 300 से अधिक विभिन्न सांस्कृतिक एवं बहुआयामी गतिविधियाँ सम्पन्न हुई। इस महोत्सव में लाखों लोग भागीदार रहे जबकि सोशल मीडिया के माध्यम से करोड़ों लोग विक्रमोत्सव से जुड़े। विक्रमोत्सव की बहुआयामी गतिविधियों में मध्यप्रदेश के सभी प्रमुख शिवरात्रि मेलों का समारंभ, कलश यात्रा, विक्रम व्यापार मेला, संगीत, नृत्य, वादन, शिवोहम, आदि-अनादि पर्व समारोह, विक्रम नाट्य समोराह, चित्र प्रदर्शनियाँ, संगोष्ठी, भारतीय इतिहास समागम, राष्ट्रीय विज्ञान समागम, वेद अंताक्षरी, कोटि सूर्योपासना, शिल्प कला कार्यशाला, प्रकाशन, विक्रम पंचांग, पौराणिक फिल्मों का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव, बोलियों एवं हिन्दी रचनाओं का अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, 1000 ड्रोन्स की प्रस्तुति व ख्यात कलाकारों की प्रस्तुतियाँ शामिल है।

प्रधानमंत्री कर चुके हैं सराहना

विगत दिनों माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विक्रमोत्सव की सराहना करते हुए कहा कि उज्जैन के महान सम्राट विक्रमादित्य के गौरव और वैभव को जन-जन तक पहुँचाने का यह प्रयास सराहनीय है। उनका शासन काल जन-कल्याण, सुशासन और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए जाना जाता है। मध्यप्रदेश के ऊर्जावान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में यह आयोजन निश्चित रूप से युवा पीढ़ी को अपने गौरवशाली अतीत से जोड़कर आत्मविश्वास और कर्तव्यनिष्ठा की भावना से परिपूर्ण नागरिक बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

समन्वय भवन में आज अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस पर होगा 'सहकारी युवा संवाद'

मुख्यमंत्री होंगे मुख्य अतिथि

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस पर सहकारी युवा संवाद 5 जुलाई को सुबह 10 बजे समन्वय भवन में आयोजित किया गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता सहकारिता मंत्री विश्वास कैलाश सारंग करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव युवाओं से सहकारी युवा संवाद करेंगे। कार्यक्रम को सहकारिता मंत्री श्री सारंग भी संबोधित करेंगे और अपर मुख्य सचिव श्री अशोक वर्णबाल द्वारा स्वागत उद्बोधन दिया जायेगा। अतिथियों एवं युवाओं के मध्य समावेशी एवं संवहनीय विकास में सहकारिता की भूमिका विषयक संवाद होगा। इस दौरान राज्य सहकारी संघ द्वारा क्रियान्वित भारत सरकार हस्तशिल्प विभाग के सीएचसीडीएस स्कीम के हस्तशिल्प प्रशिक्षणार्थियों को टूलकिट वितरण भी होगा। राज्य सहकारी संघ एवं अपेक्स बैंक ट्रेनिंग कॉलेज द्वारा इस संयुक्त आयोजन में विषय विशेषज्ञों द्वारा सहकारिता की अवधारणा एवं विकास, सहकारिताओं के प्रकार, सहकारिता की वैधानिक पृष्ठभूमि, सहकारी सेक्टर में स्वरोजगार की संभावनाएं और 'सहकार से समृद्धि' योजना का विवरण एवं प्रगति के बारे में जानकारी दी जायेगी। कार्यक्रम की शुरूआत सहकारी गीत गायन से होगी। कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा सहकारी ध्वजारोहण एवं सहकारिता पर आधारित फिल्म का प्रदर्शन भी किया जायेगा।

जानवरों से फसल की सुरक्षा के लिये खेत पर जाली लगाने का आधा खर्च सरकार वहन करेगी

भोपाल (नप्र)। फसलों को जंगली जानवरों से बचाने के लिए खेतों पर जाली लगाने का आधा खर्चा राज्य सरकार वहन करेगी। अब राष्ट्रीय बागवानी एकीकृत विकास कार्यक्रम के तहत उद्यानकी फसल उगाने वाले कृषक अपने खेत के चारो ओर गेलनवाईज जाली लगवा सकते है। उद्यानकी एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग द्वारा इच्छुक किसानों से ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किये गए हैं। आयुक्त उद्यानिकी के अनुसार उद्यानकी फसलों में सब्जी, फल, फूल एवं मसालों की फसलों को जंगली जानवरों द्वारा क्षति पहुंचाई जाती है इससे बचाव के लिये यह योजना लागू की गई है। विभाग द्वारा किसानों को जाली लगाने में आने वाला खर्च का आधा (50 प्रतिशत) अनुदान प्रदान किया जाएगा। जाली लगाने का खर्चा 300 रुपये प्रति रनिंग मीटर आता है यानि एक हजार रनिंग मीटर का खर्चा तीन लाख रुपये है इसमें डेढ़ लाख रुपये राज्य सरकार देगी तथा शेष डेढ़ लाख रूपये किसान वहन करेगा।

भोपाल में नए प्रदेश भाजपा अध्यक्ष का स्वागत

• पूर्व मंत्री बोले- खंडेलवाल हमेशा पीछे रहकर काम करने वाले कार्यकर्ता हैं

भोपाल (नप्र)। बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल का शुक्रवार को भोपाल जिला इकाई ने स्वागत किया। रवींद्र भवन में आयोजित कार्यक्रम में भोपाल के बीजेपी विधायकों के साथ बीजेपी संगठन के पदाधिकारी मौजूद हैं। इस मौके पर पूर्व मंत्री उमाशंकर गुप्ता ने कहा कि हेमंत खंडेलवाल के प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद कार्यक्रम में मौजूद हर कार्यकर्ता अपने को प्रदेश अध्यक्ष मानता है। यही उनकी सहजता है। खंडेलवाल हमेशा पीछे रहकर काम करने वाले कार्यकर्ता हैं और उनके नेतृत्व में संगठन मजबूत होगा। पूर्व विधायक ध्रुव नारायण सिंह ने कहा कि नए अध्यक्ष जैसे बाहर से हैं वैसे ही अंदर से सहज और सरल हैं। विधायक रामेश्वर शर्मा ने कहा कि सहज सरल कार्यकर्ता को पार्टी ने जिम्मेदारी दी है इससे हम सब गौरवांवित हैं।

पेंट्रीकार में गंदगी, जनता खाना गायब

यात्रियों ने खाद्य गुणवत्ता में कमी और ओवर चार्जिंग की शिकायतें भी की

भोपाल (नप्र)। रेलवे की सुविधाओं को दुरुस्त करने के उद्देश्य से वाणिज्य विभाग ने ट्रेनों और स्टेशनों पर व्यापक निरीक्षण अभियान चलाया। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ कटारिया के मार्गदर्शन में मंडल वाणिज्य प्रबंधक पंकज दुबे ने पेंट्रीकार, स्टेशन स्वच्छता और टिकट जांच व्यवस्थाओं की गहन समीक्षा की। इस दौरान यात्रियों से सीधा संवाद कर उनकी शिकायतें भी जानी गईं। ट्रेन संख्या 12137 पंजाब मेल की पेंट्रीकार का निरीक्षण किया गया। इस दौरान पेंट्री प्रबंधक की उपस्थिति में यात्रियों से बातचीत की गई। यात्रियों ने खाद्य गुणवत्ता में कमी और ओवर चार्जिंग की शिकायतें कीं। दुबे ने तत्काल पेंट्री प्रबंधक को बुलाकर ओवर चार्जिंग रोकने और सेवा सुधार के सख्त निर्देश दिए।

पेंट्री में मिली ये गंभीर लापरवाहियां

जनता खाना उपलब्ध नहीं था।
खाने के पैकेटों पर मूल्य अंकित नहीं थे।
पेंट्रीकार में स्वच्छता नहीं थी।

स्टाफ बिना यूनिफॉर्म और आईडी के काम कर रहा था। इस पर पेंट्री प्रबंधक और स्टाफ को सख्त हिदायत दी गई कि सुधार नहीं होने पर कार्रवाई तय है।

गंजबासौदा स्टेशन की सफाई पर उठे सवाल: निरीक्षण का अगला पड़ाव गंजबासौदा रेलवे स्टेशन रहा। यहां प्लेटफॉर्म की सफाई व्यवस्था असंतोषजनक मिली। प्लेटफॉर्म शेड से बारिश का पानी रिसता मिला। सफाई ठेकेदार को तत्काल सुधार के निर्देश दिए गए हैं। गंजबासौदा स्टेशन पर भोपाल-बिलासपुर एक्सप्रेस, भोपाल-बीना मेमू और ग्वालियर-भोपाल इंटरसिटी समेत अन्य यात्री ट्रेनों की जांच की गई। सभी ट्रेनों में टिकट चेकिंग स्टाफ को निर्देश दिए गए कि बिना टिकट यात्रियों पर कठोर कार्रवाई की जाए। निरीक्षण में मुख्य टिकट निरीक्षक अरुण कुमार श्रीवास्तव, खानपान निरीक्षक हेमराज मीणा, मुख्य वाणिज्य निरीक्षक मानवेंद्र सिंह और मंडल वाणिज्य निरीक्षक (विदिशा) वी.एम. राव शामिल रहे।

नियमित जांच से सुधरेगी व्यवस्था

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ कटारिया ने कहा कि यात्रियों को गुणवत्तापूर्ण सेवा और अनुशासन सुनिश्चित करने के लिए इस तरह के नियमित निरीक्षण आवश्यक हैं। भविष्य में भी यह कार्रवाई लगातार जारी रहेगी।

नर्सिंग घोटाले में अवमानना नोटिस पर बोले सिंघार

भाजपा का भ्रष्टाचार बचाओ अभियान जारी, जानबूझकर नहीं दीं सीबीआई जांच की फाइलें

भोपाल (नप्र)। एमपी में हुए नर्सिंग घोटाले को लेकर एक बार फिर विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने सरकार को घेरा है। सिंघार ने एक्स पर किए ट्वीट में कहा कि भाजपा का 'भ्रष्टाचार बचाओ अभियान' जारी है। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने नर्सिंग काउंसिल के चेयरमैन और सचिव को अवमानना नोटिस जारी किया है क्योंकि उन्होंने जानबूझकर फर्जी कॉलेजों की फाइलें पेश नहीं कीं। सिंघार ने लिखा कि हाईकोर्ट ने सीबीआई को भी जांच की सारी फाइलें सौंपने का आदेश दिया है लेकिन सवाल ये है कि पिछली सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट में आईएनसी के सचिव का कोर्ट में पेश न होना और अब चेयरमैन का भी न्यायालय के आदेश को अनदेखा करना, क्या ये सिर्फ अफसरों की लापरवाही है या भ्रष्टाचारियों की मिलीभगत है? आखिर किसके इशारे पर न्यायालय की अवमानना हो रही है? सिंघार ने लिखा कि नर्सिंग घोटाले की हकीकत यह है कि प्रदेश में बड़ी संख्या में फर्जी नर्सिंग कॉलेज खुले। बिना क्लास और बिना स्टाफ के अयोग्य लोगों को डिग्रियां बांट दी गईं। नर्सिंग शिक्षा के नाम पर शुरू हुए इन भ्रष्टाचार के अड्डों को सरकारी संरक्षण मिला। सिंघार के अनुसार उन्होंने सड़क से लेकर सदन तक लगातार नर्सिंग घोटाले पर सरकार से सवाल किए हैं लेकिन सरकार हर बार चुप रही है।

एनसीआरबी के आंकड़े गंभीर

सिंघार ने कहा कि एनसीआरबी की पिछली रिपोर्ट और गृह विभाग के आधिकारिक आंकड़े बताते हैं कि सिर्फ वर्ष 2024 में मध्यप्रदेश में 7,250 बलात्कार के मामले दर्ज हुए हैं यानी हर दिन औसतन 20 रेप हुए हैं। ऐसे में यह दावा करना कि कानून बना देने से सब कुछ ठीक हो गया, सच्चाई से आंखें मूंदने जैसा है। यहां मूल सवाल सिर्फ कानूनों के होने का नहीं बल्कि यह है कि महिलाओं के खिलाफ हो रही हिंसा को रोकने के लिए सरकार ठोस कदम क्यों नहीं उठा पा रही है? हर दिन सामने आ रही दरिंदगी की घटनाएं यह साबित करती हैं कि इन घटनाओं पर लगाम कागजी प्रावधानों से नहीं बल्कि सक्रिय नीति, जवाबदेही और प्रशासनिक दृढ़ता से लगेगी। दुखद यह है कि जब भी महिलाएं आवाज उठाती हैं तो सरकार सिर्फ औपचारिक बयान देकर मौन धारण कर लेती है।

बीजेपी के कार्यक्रम पर भी ट्वीट, महिला सुरक्षा पर सवाल

सिंघार ने एक अन्य ट्वीट में कल हुए भाजपा महिला मोर्चा के कार्यक्रम में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर छात्रा द्वारा सरकार पर सवाल उठाने का जिक्र किया है। सिंघार ने लिखा है कि भाजपा महिला मोर्चा की ओर से राजधानी भोपाल में आयोजित मॉक पार्लियामेंट में विपक्ष की भूमिका में शामिल हुई छात्रा ने गंभीर मुद्दा उठाते हुए सरकार को घेरा है कि समय-समय पर इवेंट और विकास की बातें तो हमेशा की जाती हैं लेकिन महिलाओं की सुरक्षा, बलात्कार और छेड़छाड़ जैसे मामलों पर कभी गंभीर चर्चा नहीं होती और इससे जुड़ी बातें आखिर क्यों दबाई जाती हैं? सिंघार ने लिखा कि इस पर जवाब में मुख्यमंत्री ने कहा कि मध्यप्रदेश ऐसा पहला राज्य है, जिसने महिलाओं के खिलाफ जघन्य अपराधों में फांसी की सजा का प्रावधान किया है लेकिन यह बयान जमीनी सच्चाई से बिल्कुल अलग है।

मैहर में नायब तहसीलदार को ट्रैक्टर से कुचलने की कोशिश

मैहर के कुबरी गांव की घटना, आरोपी रेत माफिया साथियों के साथ फरार

मैहर (नप्र)। मैहर जिले के कुबरी गांव में शुक्रवार दोपहर करीब 12 बजे नायब तहसीलदार रोशन रावत पर रेत से भरी ट्रैक्टर ट्रॉली चढ़ाने की कोशिश की गई। गनीमत है कि वह बाल-बाल बच गए। घटना के समय 40 से 50 ग्रामीण मौजूद थे। मामले में रामनगर थाने में शिकायत की जा रही है। नायब तहसीलदार रावत के मुताबिक, मैं तीन पटवारियों के साथ मुन्नी बाई रजक की शिकायत पर अतिक्रमण हटाने गया था। इस बीच गांव में अवैध रेत खनन की गतिविधि दिखी। मैंने ट्रैक्टर-ट्रॉली को रोका। हम लोग जब उनसे पूछताछ कर रहे थे, तभी ट्रैक्टर के ड्राइवर रावेंद्र उर्फ नेपाली ने मुझे और मेरी टीम को कुचलने की कोशिश की और सड़क पर रेत गिराते हुए भाग गया। मैंने और मेरी टीम ने उनका पीछा करने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हुए। बता दें प्रदेश सरकार ने रेत खनन पर रोक लगा रखी है। इसके बावजूद मर्यादपुर चौकी क्षेत्र में अवैध खनन जारी है। इस घटना से चौकी प्रभारी की कार्रवाई पर भी सवाल उठ रहे हैं।

तबादले के 16वें दिन ही पटवारी दूसरी तहसील में अटैच

भोपाल में 12 पटवारियों के अटैचमेंट भी खत्म; देवेंद्र पटेल को बैरसिया तहसील भेजा

भोपाल (नप्र)। भोपाल की 5 तहसीलों में पदस्थ 12 पटवारियों के अटैचमेंट कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने खत्म कर दिए हैं। इन्हें उनकी पूर्व पदस्थापना वाली तहसीलों में ही वापस भेजा गया है। इधर, एक अनोखा मामला भी सामने आया है। जिस पटवारी का 16 दिन पहले तबादला किया गया था, उसे ही दूसरी तहसील में अटैच कर दिया गया। बता दें कि 17 जून को 14 पटवारियों को इधर से उधर किया गया था। इनमें हुजूर में पदस्थ देवेंद्र पटेल को बैरसिया तहसील में भेजा गया था। अब अपर कलेक्टर दक्षिण ने पटेल को नजूल वृत्त टीटी नगर में कार्य संपादित करने के लिए अटैच किया है। एक अन्य पटवारी राजेंद्र पटेल को टीटी नगर से हुजूर तहसील में अटैच किया है।

कई इलाकों में बदबूदार पानी

सप्लाई को लेकर बीजेपी पार्षद ने लिखा लेटर; बोले-पीने योग्य नहीं

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कई इलाकों में गंदे और बदबूदार पानी की सप्लाई हो रही है। इसे लेकर पार्षदों के पास भी शिकायतें पहुंच रही हैं। ऐसे में बीजेपी पार्षद पप्पू विलास राव घाड़गे ने महापौर मालती राय को लेटर लिखा है। जिसमें पानी के पीने योग्य नहीं होने की बात भी कही गई है। पार्षद घाड़गे ने बताया कि पानी गंदा, बदबूदार और मटमैला आ रहा है। जिसमें सुधार करने के लिए महापौर को पत्र लिख कार्रवाई का आग्रह किया गया है।

वीडियो भी उपलब्ध करवाए

पार्षद घाड़गे ने लेटर में बताया कि नर्मदा लाइन की पाइप लाइन से वार्ड-34 के जहांगीराबाद एवं आसपास के इलाकों में पानी की सप्लाई की जाती है। जहां कई दिन से बदबूदार पानी आ रहा है, जो पीने के योग्य नहीं है। इसे पीने से बीमारियां हो सकती हैं। जिसकी शिकायत लोगों ने की है। इसलिए पड़ताल की जाए कि आखिर इतना गंदा पानी क्यों सप्लाई हो रहा है? उन्होंने गंदे पानी के वीडियो भी उपलब्ध करवाए हैं।

वार्ड-40 में भी गंदा पानी

जोन-11 के वार्ड नंबर-40 में भी पानी को लेकर शिकायत हुई है। रहवासी अलमास अली ने बताया कि नर्मदा जल में क्लोरीन की अधिक मात्रा मिलाई जा रही है। इस कारण जलन और उल्टी जैसे लक्षण सामने आ रहे हैं। बच्चे, बुजुर्ग और गर्भवती महिलाओं को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

गिरफ्तारी से बचने 2 मंजिला मकान से छलांग लगाई

बदमाश बन्ने खां को पकड़ने के दौरान पुलिसकर्मी भी घायल; पार्टी में की थी दोस्त की हत्या

भोपाल (नप्र)। छोला मंदिर क्षेत्र स्थित लीलाधर कॉलोनी में अमित वर्मा हत्याकांड के मुख्य आरोपी नसीम उर्फ बन्ने खां को पुलिस ने गुरुवार को बैतूल से घेराबंदी कर पकड़ा। गिरफ्तारी के बाद जब पुलिस उसे घटना में प्रयुक्त पिस्टल की बरामदगी के लिए लेकर गई, तभी आरोपी ने मौके पर पुलिस को चकमा देते हुए दो मंजिला छत से छलांग लगा दी। इस दौरान वह गंभीर रूप से घायल हो गया। उसके पैरों में गंभीर चोट आई है।फिलहाल उसे भोपाल के निजी अस्पताल में भर्ती किया गया है। यहां उसका इलाज जारी है।

पुलिस टीम को भी आई चोट, प्रधान आरक्षक घायल: बन्ने खां की इस अचानक हरकत से मची भगदड़ में पुलिस स्टाफ को भी चोटें आई हैं। निशातपुरा थाने के प्रधान आरक्षक मुकेश भारती घायल हुए हैं। पुलिस की टीम को पूरी सतर्कता के बावजूद आरोपी की यह हरकत भारी पड़ी। टीआई सुरेश चंद्र नागर ने बताया कि आरोपी को हत्या में प्रयुक्त हथियार की बरामदगी के लिए घटनास्थल पर ले जाया गया था। जैसे ही आरोपी को लेकर टीम उस मकान पर पहुंची, उसने पिस्टल के नजदीक जाते ही छत से छलांग लगा दी। इसके बाद उसे तत्काल उपचार के लिए अस्पताल लाया गया।

नहीं हो सकी पूछताछ: पुलिस के अनुसार बन्ने खां की हालत फिलहाल ठीक नहीं है, जिससे उसकी औपचारिक पूछताछ शुरू नहीं हो सकी है। डॉक्टरों की निगरानी में उसका इलाज जारी है। यह भी स्पष्ट नहीं हो सका है कि उसके पैर टूटे हैं या नहीं। पुलिस मेडिकल रिपोर्ट का इंतजार कर रही है। पुलिस पूछताछ में बन्ने खां ने माना कि हवाला की रकम को लेकर उसका अमित वर्मा से विवाद हुआ था। इसी विवाद में गोली चली और अमित की मौत हो गई। इसके बाद बन्ने फरार हो गया था। फरार और शातिर किस्म के अपराधी होने के चलते बन्ने खां की निगरानी के लिए पीपुल्स अस्पताल में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया है। सुरक्षा के लिहाज से पूरी सतर्कता बरती जा रही है।

मुख्यमंत्री ने स्वामी विवेकानंद की पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने दर्शन, वेद एवं योग के माध्यम से विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने वाले, राष्ट्रऋषि स्वामी विवेकानंद की पुण्यतिथि पर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राष्ट्रसेवा के संकल्प को साकार करने के लिए श्रेष्ठ जीवन आदर्श की प्रेरणा देकर आपने युवाओं का मार्ग प्रशस्त किया। आपके प्रखर विचार एवं कृतित्व देश की अमूल्य धरोहर हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्वामी विवेकानंद न केवल भारत के सांस्कृतिक गौरव के प्रतीक हैं, बल्कि उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा, वेदांत दर्शन और योग को वैश्विक मंच पर स्थापित किया। उनके विचार आज भी युवाओं को राष्ट्र निर्माण में योगदान के लिए प्रेरित करते हैं।

एमडी पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी का प्रभार अनय द्विवेदी को

भोपाल (नप्र)। राज्य शासन द्वारा एमडी मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी लिमिटेड का प्रभार एमडी पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी श्री अनय द्विवेदी को दिया गया है। वर्तमान एमडी पॉवर ट्रांसमिशन श्री सुनील तिवारी का कार्यकाल 5 जुलाई 2025 को पूरा हो रहा है।

संपादकीय

रूस का बड़ा कदम

भारत के दोस्त रूस ने अफगानिस्तान की तालिबान सरकार को मान्यता देकर बड़ा कदम उठाया है। इसका सीधा प्रभाव मध्य एशिया की भू राजनीतिक स्थिति पर पड़ेगा। गुरुवार को मॉस्को ने तालिबान सरकार द्वारा नियुक्त नए अफगान राजदूत गुल हसन की नियुक्ति को स्वीकार कर दुनिया को अलग संदेश दिया। तालिबान प्रशासन ने रूस के कदम को साहसिक फैसला बताया है। तालिबान ने अगस्त 2021 में काबुल पर कब्जा कर लिया था, जिसके बाद से वह देश पर शासन कर रहा है। हालांकि, उसे अभी तक किसी देश ने उसकी सरकार को मान्यता नहीं दी थी। वैसे तालिबान ने रूस के साथ चीन और संयुक्त अरब अमीरात ने भी अपना राजदूत नियुक्त किया है, लेकिन चीन ने भी उसे अधिकृत तौर पर स्वीकार नहीं किया है। जहां तक भारत की बात है तो यह एक महत्वपूर्ण पहल है। सवाल यह उठ रहा है कि जब रूस अफगानिस्तान को मान्यता दे सकता है तो भारत ऐसा क्यों नहीं कर रहा, खास कर तब जबकि अफगानिस्तान की तालिबान सरकार का रवैया भारत के प्रति मैत्रीपूर्ण रहा है और भारत ने वहां काफी निवेश किया हुआ है। हालांकि भारत ने अनाधिकारिक रूप से तालिबान सरकार से तार जोड़े हुए हैं। बहरहाल रूस ने जो हिम्मत दिखाई है, वह तो पाकिस्तान भी नहीं दिखा सका है। इसका मुख्य कारण यह है कि कट्टरपंथी तालिबान शासन को लेकर सभी के मन में संशय रहा है। खासकर महिलाओं को लेकर तालिबान सरकार के विचारों से शायद ही कोई सहमत रहा हो। लेकिन यह भी सच्चाई है कि लगभग चार साल से तालिबान का समूचे अफगानिस्तान पर नियंत्रण है। इस बीच रूसी विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि हमारा मानना है कि अफगानिस्तान के इस्लामिक अमीरात की सरकार को आधिकारिक मान्यता देने से विभिन्न क्षेत्रों में हमारे देशों के बीच उत्पादक द्विपक्षीय सहयोग के विकास को गति देगा। उधर मॉस्को स्थित अफगान दूतावास में तालिबान का सफेद झंडा फहराया गया, जिसने पूर्व सरकार के झंडे की जगह ले ली। रूसी समाचार एजेंसी TASS ने इन तस्वीरों को जारी किया है। अफगानिस्तान के विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी ने अफगानिस्तान में रूस के राजदूत दिमित्री झिरनोव के साथ काबुल में बैठक की। मुत्ताकी ने कहा, यह साहसी निर्णय दूसरों के लिए उदाहरण होगा...। यह हमारे संबंधों के इतिहास में एक बड़ा मील का पत्थर है। रूस ने इस साल अप्रैल में ही तालिबान सरकार पर से सारे प्रतिबंध हटा लिए थे। हालांकि रूस की मान्यता के बावजूद तालिबान पर अपने मानवाधिकार रिकॉर्ड को सुधारने का दबाव है। अलबत्ता रूस का फैसला भविष्य में अन्य देशों को अपने रुख पर पुनर्विचार करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है। दिलचस्प बात है कि एक समय रूस समर्थित अफगानिस्तान सरकार को तालिबान ने ही बेदखल किया था। अब रूस ने उसी तालिबान से दोस्ती कर ली है। हालांकि भारत भी मध्य एशिया की भू राजनीति में सक्रिय है, लेकिन उसकी गति धीमी है। हाल में चीन में सम्पन्न एससीओ की मीटिंग में भारतीय रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने अफगानिस्तान में शांति, सुरक्षा और स्थिरता के लिए भारत का समर्थन दोहराया। रक्षामंत्री ने कहा कि अफगानिस्तान में हमारी तत्काल प्राथमिकताओं में अफगान लोगों को मानवीय सहायता प्रदान करना और उनकी समग्र विकासात्मक आवश्यकताओं में योगदान देना शामिल है। दरअसल भारत के लिए अफगानिस्तान सेंट्रल एशिया में दाखिल होने का रास्ता है। भारत ईरान और अफगानिस्तान होते हुए सेंट्रल एशिया में प्रवेश का रूट तैयार कर रहा है। कुछ महीने पहले भारतीय विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री ने तालिबान सरकार के वरिष्ठ नेताओं संग बातचीत की थी। अब देखना यह है कि भारत सरकार तालिबान सरकार को अधिकृत तौर पर मान्यता कब देती है।

नजरिया

मानवाधिकार संरक्षण के लिए सेविया प्रतिबद्धता ऐतिहासिक

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक भारत के राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। वर्तमान में केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफ़ेसर हैं।

बेहतर कानून बड़े दिल वाले लोग बनाते हैं, यह शब्द हैं राफेल लेमकिन के, जो राज्यों से यह उम्मीद करते थे कि वे मनुष्य को केंद्र में रखकर अनुशासित न्याय व्यवस्था का सूत्रपात करें। आज 21वीं सदी में राज्यों की स्थिति बहुत ही चिंताजनक है। विश्व के न्याय ही सबसे महंगे हो गए हैं। ऐसा लगता है कि विश्व में अधिकारों की रक्षा के लिए राज्य अब तैयार नहीं हैं। वे अपनी मनमानी कर रहे हैं। वे निरंकुश हो रहे हैं। वे विश्व के हैपीनेस इंडेक्स को बर्बाद करने पर तुले हैं। ऐसे मानव अधिकारों का संरक्षण होना तो संभव नहीं है।

स्पेन के सेविया में विकास के लिए वित्त पर चौथा अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन हुआ है, जहाँ विश्व के 150 देशों के प्रतिनिधि एकत्रित हुए और इस बात पर सहमति बनाने की कोशिश कर रहे हैं कि हम अपना भविष्य किस प्रकार सुरक्षित करें। इस सम्मेलन में एक खास रिपोर्ट पेश हुई है जिसका नाम है– ऋण संकट से निपटना: सतत वित्तपोषण को सक्रिय बनाने 11 कार्रवाइयाँ। आमिना मोहम्मद, जो कि संयुक्त राष्ट्र की उप महासचिव हैं, ने रिपोर्ट जारी करते हुए कहा है कि उधार लेना विकास के लिए महत्वपूर्ण है, मगर आज, अनेक विकासशील देशों के लिए उधार लेना फ़ायदे का सौदा साबित नहीं हो रहा है। कम आय वाले दो-तिहाई से अधिक देश या तो ऋण संकट में हैं, या इसके उच्च जोखिम में दबे हुए हैं। हाल ही में, ऑपरेशन सिंदूर कका समय स्मरण करें। संघर्ष के बीच आइएमएफ ने पकिस्तान को क़र्ज़ दिया। इसके पहले पाकिस्तान पर बहुत क़र्ज़ है। ऐसे बहुत से देश हैं जिन पर क़र्ज़ है। इसी की बात अमीना जे। मोहम्मद कह रही हैं। साम्राज्यवादी देश धनाढ्य हैं। वे ऐसे मौके की खोज में रहते हैं कि कैसे विकासशील देश किसी जोखिम का सामना करें, और हम उनकी मदद के बहाने बनकर ज़रूरत बनें। कैसे कोई देश संघर्ष की स्थिति में आएं, और हमसे वे मदद की गुहार करें। इसमें उनकी अपनी विशिष्टता भी दर्शानी होती है और संबंधित देश पर उपकार भी जताना होता है। इसलिए अब ऋण संकट से निपटारे हेतु विविध कार्रवाइयों पर ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है, जबकि इसका हल इससे निकलने वाला नहीं है।

बहुपक्षीय स्तर पर, अन्तरराष्ट्रीय स्तर व राष्ट्रीय स्तर पर स्तर पर किये जाने वाले प्रयास से यह उम्मीद की जा रही है कि कम आय वाले देशों के लिए लक्षित समर्थन के साथ, व्यवस्था में धन के प्रवाह को बढ़ाया जाए। क़र्ज़दारों और क़र्ज़ देने वालों के लिए सीधे जुड़ने के लिए एक मंच स्थापित किया जाए। संस्थागत क्षमता को मज़बूत हो साथ ही नीति समन्वय में सुधार भी अवश्य हो, ब्याज़ दरों का प्रबन्धन ज़रूरी है इसके साथ जोखिम प्रबंधन को मजबूत किया जाए। इन ग्यारह प्रस्तावों, जिन पर कार्रवाई के लिए सभी पक्षकारों की इच्छाशक्ति यदि साथ देगी तो कर्ज़दार देश राहत पा सकेंगे। सेविया की प्रतिबद्धता-पत्र में तो सभी देश एक दूसरे की ओर देख रहे हैं और सभी लक्ष्य को हासिल करने की हामी भी भर रहे हैं। सफलता कितनी मिलेगी, यह तो आने वाला समय तय करेगा।

विकास के अधिकार पर संयुक्त राष्ट्र के स्वतंत्र मानवाधिकार विशेषज्ञ सूर्य देव का मानना है एक समृद्ध जीवन के लिए हमें बहुत से संसाधनों, अधिकारों और स्वतंत्रताओं की ज़रूरत होती है। मगर दुनिया में करोड़ों लोग अब भी विकास प्रक्रिया के भागीदार बनने और उसका लाभ उठाने से वंचित हैं। यह वंचित होने की प्रक्रिया के कुछ आधारभूत पहलू हैं जिसे राज्य बिलकुल ध्यान नहीं देते। यदि वे क़र्ज़ में आकंठ डूबे न हों तो निश्चय ही अपने नागरिकों के लिए कार्य कर सकें और उनके मानव अधिकारों की सुरक्षा कर सकें। लेकिन दुर्भाग्य से विश्व के बहुत से देश खासकर अफ्रीकी क्षेत्र में अपने नागरिकों के हितों पर ज्यादा कार्य नहीं कर पा रहे हैं। अफ़ग़ानिस्तान में क़रीब 80 प्रतिशत महिलाएँ ग़रीबी रेखा के नीचे जीवन जी रही हैं। उनके आर्थिक बहिष्कार से न सिर्फ़ ग़रीबी बढ़ी है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था के उबरने और समृद्धि की दिशा में बाधा उत्पन्न हुई है। एफएफडी-4 हुई बहस में खुद यह स्वीकार किया गया कि अगर सार्वजनिक और निजी वित्तीय संसाधनों तक महिलाओं की पहुँच को बढ़ाया जाए, ऋण की गारंटी दी जाए, अन्तरराष्ट्रीय बाज़ारों में बेहतर शर्तें उपलब्ध कराई जाएँ, और सहायता नैटवर्क को मज़बूत किया जाए, तो वे न केवल अपने व्यवसाय को आगे बढ़ा सकती हैं बल्कि अफ़गानिस्तान, इक्वाडोर या किसी भी देश में एक बेहतर भविष्य की राह बना सकती है। लेकिन सवाल यह है कि अफ़गानिस्तान जैसे देश, जो अपने यहाँ की महिलाओं को आत्मनिर्भर होने की पहल ही करने को तैयार नहीं हैं, तो ऐसे में व्यापक परिवर्तन कैसे होंगे? सेविया सम्मेलन ने माना कि भूख को ख़त्म करना, लैंगिक समानता बढ़ाना, पर्यावरण की रक्षा करना, जलवायु परिवर्तन से लड़ना और महासागरों को बचाना, ये कोई कट्टरपंथी विचार नहीं हैं। इसके साथ शिक्षा से वंचित होने की बात अगर सेविया सम्मेलन करता तो और अच्छा होता।

सेविया प्रतिबद्धता तो विकास को पुनर्जीवित करने और उसे गतिमान बनाने के लिए हुई है। इस सम्मेलन से विश्व में चल रहे सतत विकास लक्ष्य आन्दोलन को हो सकता है बल मिल जाए। हो सकता है इस सम्मेलन से राज्य अपनी नींद से जाग जाएँ और एसडीजी-2030 के लक्ष्य हासिल करने के लिए आगे बढ़ें।

एक गहरी बात इस महाबैठक की यह उभरकर आई है कि सभी देश 4 ट्रिलियन डॉलर का निवेश करके सतत विकास लक्ष्य को हासिल करने की कोशिश हो सकती है। महासचिव एंतोनियो गुटेरेस ने बहुत भावुक होकर कहा है कि 2015 में जिन महत्वाकांक्षी सतत विकास लक्ष्यों-एसडीजी पर सहमति हुई थी, उनमें से लगभग दो-तिहाई लक्ष्य, गम्भीर रूप से पिछड़ चुके हैं। और उन्हें फिर से पटरी पर लाने के लिए अभूतपूर्व 4 ट्रिलियन डॉलर के निवेश की आवश्यकता पड़ेगी। इस भावुक अपील को देश गंभीरता से लें तब तो ठीक। वरना सच तो यही है कि युद्ध व संघर्ष में धन की अकूत खर्च ने सभी सतत विकास लक्ष्य के निवेश को लगभग रोक दिया है और सतत विकास लक्ष्य देशों की प्राथमिकता बन ही नहीं सका।

सेविया सम्मेलन की प्रतिबद्धताएं मानवाधिकार संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण मानी जा सकती है लेकिन यदि देश अमल करेंगे तब। वैश्विक स्तर पर मानवाधिकारों के लिए सेविया अगर योगदान दे सका तो निश्चय ही मनुष्यता की यह बहुत बड़ी जीत होगी। वैसे तो संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने यह कह दिया था कि यह सम्मेलन केवल धन के बारे में नहीं है। यह उस साझा भविष्य में निवेश का अवसर है, जिसका निर्माण हम सब मिलकर करना चाहते हैं। यह न्याय की पुर्नस्थापना का प्रयास है, ताकि हर व्यक्ति को गरिमा के साथ जीने का अधिकार और अवसर मिल सके। मानवाधिकारवादियों, गरिमा के हितधारकों व मनुष्यता के लिए निवेश करने वाले राज्य अगर यह बात समझ सके तो सेविया से एक ऐसे युग की शुरुआत होगी, जो बहुत ही परिवर्तनकारी परिणाम की अपेक्षा संपूर्ण विश्व लंबे समय से कर रहा है।

सामयिक

जाति विमर्श में वर्तमान होती घटनाएं

डॉ. चित्रा माली

लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं

अभी हाल ही में उत्तर प्रदेश के इटावा से 35 किलोमीटर दूर दादरपुरा में कथावाचक मुकुटमणि यादव और उनके साथियों के साथ अमानवीय व्यवहार किया गया जिसके वीडियो सोशल मीडिया पर मौजूद हैं। धर्म,जाति और जेंडर आधारित भेदभाव की पूर्व में भी इस तरह की घटनाएं घटती होती रही हैं जिनसे हम सभी वाकिफ हैं। लेकिन क्या इन घटित होती सभी घटनाओं को हम सामान्य मान बैठे हैं? या ये सभी कृत्य हमारे अधिक सभ्य और सुसंस्कारी होने की निशानी है? इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है जो हमारी चिंताओं से नदारद है। धर्म के आधार पर बहुसंख्यक हिंदू समाज को अन्य धर्मों के प्रति असहिष्णु बनाने की प्रक्रिया जारी है। धर्म में हिंदू वर्सेज अन्य की अवधारणा को लगातार पुष्ट किया जा रहा है जो आवाम को एक दूसरे के बरक्स खड़ा कर रही है। इसका और संकीर्ण रूप जाति आधारित भेदभाव में देखा जा सकता है। स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी जाति का बने रहना या कहें जाति के आधार पर भेदभाव का बने रहना इसकी जड़ों को तलाशने पर मजबूर करता है। जाति जिसे अंग्रेजी में कास्ट कहा जाता है जो पुर्तगाली भाषा के शब्द कास्टा से लिया गया है,जिसका तात्पर्य नस्ल,वंशानुक्रम या शुद्धवंश था जो लैटिन भाषा के शब्द कास्टस से लिया गया है जिसका मतलब शुद्ध और पवित्र है। कास्ट या जाति का मूल विचार भारतीय समाज के सामाजिक स्तरीकरण की और संकेत करता है। यह संभवतः द्वितीय या प्रथम ईसापूर्व में आया और पांचवी सदी तक काफी स्थापित हो गया। पुर्तगाली जब भारत आए तो उन्होंने भारतीय समाज में अलग अलग व्यवस्थाओं,नियमों क़ायदों और विविधताओं को देखा जो हर भारतीय के लिए सामान्य थीं पर उनके लिए नई और असामान्य थी। इस भारतीय समाज की संरचना को जानने समझने की कोशिश अवलोकन पद्धति के द्वारा की गई जो अत्यंत सूक्ष्म अध्ययन की पद्धति है। भारतीय समाज संरचना की अंतर व्यवस्था को जानने समझने के क्रम में जाति और समाज में उसके महत्व को जाना गया। जाति शब्द पुर्तगालियों की देन है जो महज 500 वर्ष पुराना है जिसे मालाबार के तट पर उनके द्वारा दिया गया था। इसके बाद से जाति शब्द का इस्तेमाल होने लगा। इस नाम से इस व्यवस्था में अंतर्निहित विभिन्न नियमों, प्रथाओं और अलग अलग इकाईयों को अभिव्यक्ति मिली। पुर्तगालियों ने जाति की खोज ही नहीं की बल्कि उन्होंने वर्ण -जाति व्यवस्था के संचालन का विस्तृत वर्णन भी पहली बार पेश किया,इसका श्रेय भी उन्हें ही जाता है। पुर्तगाली दुआरते बारबोसा ने ही जाति के पांच तत्वों की खोज की जिसमें उन्होंने बताया कि जाति एक श्रेणीबद्ध व्यवस्था है जिसके शीर्ष पर ब्राह्मण और सबसे नीचे अछूत थे। अस्पृश्यता को अपवित्रीकरण के विचार से जोड़कर देखा। जातियों के बीच में भिन्नता की पहचान सजातीय और सगोत्रीय विवाह,व्यवसाय और सहभोज के आधार पर की। जातियों द्वारा अपने रीति रिवाजों और नियम कायदों को कायम रखने के लिए कई तरह की पाबंदियां लगाने का जिक्र भी बारबोसा ने किया,साथ ही जाति के राजनीतिक संगठन को भी देखा। जाति के इन तत्वों में एक तरह के श्रेणीक्रम,वंशानुक्रम, शुद्ध-अशुद्ध,रक्त संबंधों,नातेदारी,और विवाह के नियमों को देखा जा सकता है जो आज भी विद्यमान है। जाति को एक श्रेणीबद्ध,बंद और अंतरविवाही समूह के रूप में देखा जा सकता है,साथ ही इसमें सदस्यता पूर्व निर्धारित होती है। जातियों में विभिन्न रोजगारों के कारण उनमें आर्थिक स्तर में असमानताएं है लेकिन जाति स्तरीकरण पूरी तरह से आर्थिक स्थिति पर आधारित नहीं है। यही कारण है कि आज भी आर्थिक रूप से संपन्न निम्न जातियों के लोगों के साथ भेदभाव जारी है और यही हाल उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों का भी है। थोड़ा सा स्मृति पर जोर डालने से याद आ जाएगा कि किन किन व्यक्तियों के साथ वर्तमान समय में भेदभाव परक घटनाएं घटित हुई हैं। निम्न जातियों व वर्गों के लोगों के साथ इस तरह के भेदभाव या हिंसात्मक घटनाओं का प्रतिदिन घटित होना उच्च वर्गों के लिए साधारण बात है लेकिन यह पूरी भारतीय व्यवस्था के लिए एक अभिशाप की तरह है। इन निम्न जातियों में भी एक तरह का श्रेणीक्रम है जो लगातार अपने से निम्न जातियों के साथ वैसा ही भेदभाव करती हैं जैसा इनके साथ होता है और वे लगातार अपने से उच्च जाति का अनुसरण भी करती हैं जिससे वे भी प्रिविलेज तबके में शामिल हो सकें। एम.एन.श्रीनिवास ने अपनी किताब 'रिलिजन एंड सोसाइटी अमंग द कूर्ग्स ऑफ़ साउथ इंडिया' में स्थानीय निम्न जातियों द्वारा ब्राह्मणों का सांस्कृतिक अनुसरण करने के संदर्भ में जाति गतिशीलता का वर्णन किया है। इसके बाद वे अपनी दूसरी किताब 'सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया' में संस्कृतिकरण की परिभाषा देते हुए बताते है कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक निम्न हिंदू जाति अथवा जनजाति या अन्य समूह किसी उच्च एवं द्विज जाति का अनुसरण करते हुए अपने रीति रिवाजों,कर्मकांडों,आचरण, विचारधारा एवं जीवन पद्धति में परिवर्तन करते हैं। इस प्रकार के परिवर्तन द्वारा वे आगे चलकर जाति पदानुक्रम व्यवस्था में अपेक्षाकृत उच्च स्तर प्राप्त करने की कोशिश करते हैं,जो पारंपरिक रूप से स्थानीय समुदाय द्वारा उन्हें प्रदान किए गए सामाजिक स्तर से निश्चित रूप से अलग अर्थ रखता हो। समाज में हो रहे परिवर्तनों को समझने के लिए यह दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसी के साथ हर जाति में चाहे वह निम्न हो या द्विज,सभी में एक प्रकार के इलीट वर्ग का उदय हुआ है, जिसमें इन परिवर्तनों को लगातार देखा जा सकता है। इन परिवर्तनों से समाज में हो रही हिंसक घटनाओं में भी वृद्धि को देखा जा सकता है। जबकि इन परिवर्तनों के सकारात्मक परिणाम भी आ सकते थे, लेकिन बुराईयों को ग्रहण करने की क्षमता का अधिक होना इसमें बाधक बन गया है।

ज्योतिबा फुले की तरह ही पेरियार भी भारत में जाति आधारित सामाजिक विषमता के विरोधी थे। पेरियार को गैर ब्राह्मणवादी विमर्श और राजनीति के प्रणेता के रूप में भी जाना जाता है। पेरियार ने वंचित वर्ग में धर्म और जाति आधारित परिवर्तनों की कटु आलोचना की है,वे कहते हैं कि 'वंचितों में से कुछ लोग सोचते हैं कि वे नहाएंगे,अपने माथे पर वैष्णव या शैव पहचान वाला तिलक लगाएंगे, वैदिकों की तरह कपड़े पहनेंगे,शराब या मांस का सेवन नहीं करेंगे और सामी जैसे नाम रखेंगे तो उनकी स्थिति सुधर जाएगी और अस्पृश्यता नष्ट हो जाएगी'। यह अजीब बात है खुद को यह सोचते हुए धोखा देना कि दूसरों को धोखा दिया जा सकता है। गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं कि मैंने चार वर्ण बनाए। जाति व्यवस्था धर्म की देन है। मनु स्मृति में चांडाल जाति और अन्य जातियों की उत्पत्ति की कहानी कही गई है। ऐसे में अगर ईश्वर,धर्म,गीता और मनु स्मृति समाज में विद्यमान है और उनके पक्ष में समर्थन जुट रहा है तो सोचिए शूद्र और निचली जातियों का ठप्पा हटाना कितना मुश्किल है। जाति जनित भेदभाव और धार्मिक पाखंड के विरुद्ध पेरियार ने आत्मसम्मान आंदोलन (सेल्फ रेस्पेक्ट मूवमेंट) चलाया जिसने पूरे दक्षिण भारत खासकर तमिलनाडु को हिलाकर रख दिया था। आत्मसम्मान आंदोलन चलाते हुए पेरियार ने समाज की बुद्धिवादी पुनर्रचना का प्रस्ताव भी पेश किया था। पेरियार का मानना था कि जातिप्रथा और ब्राह्मण वर्चस्व ने जो व्यवस्था कायम की है, वह समाज के बाकी अधिकांश हिस्से के लिए घोर अन्यायपूर्ण और दमनकारी है और इस व्यवस्था को बदलने की आवश्यकता है। इसी व्यवस्था परिवर्तन के लिए पेरियार ने ईश्वरवाद,धार्मिक अंधविश्वासों,पूजा-पाठ,जातिगत ऊंच-नीच और स्त्री-पुरुष भेदभाव के विरुद्ध आक्रामक अभियान भी चलाए। पेरियार द्वारा लागू की गयी विवाह की आत्मसम्मान पद्धति बहुत हद तक ज्योतिबा फुले द्वारा सत्यशोधक समाज की विवाह पद्धति से मेल खाती है। परंपरागत विवाह पद्धति में ब्राह्मणों पुरोहितों के मंत्रोच्चार और अग्नि की सप्तपदी की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। फुले और पेरियार द्वारा चलायी गयी विवाह पद्धतियों में ब्राह्मण पुरोहितों के लिए कोई स्थान नहीं था। विवाह समारोह का पूरा आयोजन साधारण और परिजनों की उपस्थिति में सम्पन्न हो जाता था। पेरियार के पूर्व ज्योतिबा फुले ने भी सत्यशोधक समाज की स्थापना की जिसका उद्देश्य शूद्रों-अतिशूद्रों को पुजारी, पुरोहित,सूदखोर आदि की सामाजिक-सांस्कृतिक दासता से मुक्ति दिलाना, धार्मिक-सांस्कृतिक कार्यों में पुरोहितों की अनिवार्यता को खत्म करना, शूद्रों-अतिशूद्रों को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना, ताकि वे उन धर्मग्रंथों को स्वयं पढ़-समझ सकें,जिन्हें उनके शोषण के लिए ही रचा गया है, सामूहिक हितों की प्राप्ति के लिए उनमें एकजुटता का भाव पैदा करना,धार्मिक एवं जाति-आधारित उत्पीड़न से मुक्ति दिलाना,व वंचित वर्ग में चेतना उत्पन्न करना था। लेकिन आज भी उत्तर भारत में ज्योतिबा फुले के सत्यशोधक समाज की अवधारणा से और पेरियार के आत्मसम्मान आंदोलन से लोग वाकिफ़ नहीं है। जबकि पेरियार ने खुद उत्तर भारत के चंद्रिका प्रसाद जिज्ञासु और ललई सिंह को अपनी किताब और लेखों के हिंदी में प्रकाशन की जिम्मेदारी भी सौंपी थी। ज्योतिबा फुले और पेरियार के विचार महाराष्ट्र और दक्षिण भारत तक सिमट कर रह गए। वर्तमान समय में ज्योतिबा फुले और पेरियार पर नए सिरे से विमर्श जारी है लेकिन अभी भी विचारों की मूल प्रस्ताविक से काफी दूर है।

वैश्विक फ़लक पर जब रंग,नस्ल,या अन्य किसी तरह का भेदभाव होता है तो उसके प्रतिरोधों को एक श्रृंखला के रूप में देखा जा सकता है,जिसमें वहां के सभ्य नागरिक भी हिस्सा लेते हैं और वह अपने जैसे अन्य नागरिकों के अधिकार के संघर्ष में शामिल होते हैं। लेकिन वहीं हम भारत में धार्मिक या जातिगत हिंसा और भेदभाव के खिलाफ किसी तरह के प्रतिरोध को नहीं देखते हैं। भारतीय समाज में प्रतिरोध का न होना कहीं न कहीं हिंसा को बढ़ावा देता है जो लगातार और हिंसक समाज की ओर अग्रसर होता जा रहा है।

ईर्ष्या से मुक्ति - एक महत्वपूर्ण कदम

विचार

संध्या अग्रवाल

आज समाचार पत्र में एक खबर पढ़कर मन हतप्रभ रह गया। एक लड़की ने अपनी सहेली के साथ ईर्ष्या रखने के कारण उस पर एसिड फेक दिया जिसके कारण वह सहेली गंभीर रूप से जल गई। एसिड कांड की यह खबर न केवल दिल को झकझोर कर गई, बल्कि यह भी दिखाया कि हमारे समाज में आज के समय में किशोर उम्र के बच्चे गुस्से और जलन में कितना उदिग्ध और अनियंत्रित हो सकते हैं। ईर्ष्यावश हिंसक होते किशोर उम्र के बच्चे की यह एक गंभीर समस्या है, जो की चिंतनीय है। ईर्ष्या मानव स्वभाव की एक दुर्भाग्यपूर्ण प्रवृत्ति है, जो व्यक्ति की सकारात्मक चेतना को नष्ट कर देती है और उसकी दिनचर्या को अस्तव्यस्त कर देती है। इससे ग्रस्त व्यक्ति नकारात्मक विचारों के चक्रव्यूह में फंस जाता है। जिसके कारण वह जीवन में प्रतिफल मिलने वाली छोटी-छोटी खुशियों से दूर हो जाता है। ऐसे में अपनी सोच को आशावादी बनाना अत्यंत आवश्यक है। तो आइये रखें कुछ बातों का ध्यान...

एक स्वाभाविक सत्य है कि जब सुख का एक द्वार बंद होता है, तो अन्य द्वार खुल जाते हैं। श्रेयस्कर होगा कि हम खुले हुए द्वारों की ओर दृष्टिपात करें और जीवन के प्रति अपने दृष्टिकोण को आशावादी बनाए रखें। दूसरों की प्रगति से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने का प्रयास करना एक उत्तम विकल्प है। ऐसे में यह उचित होगा कि इस ईर्ष्यारूपी मनोविकार से हम स्वयं को बचाएं। इसके लिए हमें अपनी सोच को आशावादी बनाना होगा। जब खुशी का एक दरवाजा बंद होता है, तो अन्य दरवाजे खुल जाते हैं। बेहतर होगा कि हम खुले हुए दरवाजों की ओर देखें और जीवन के प्रति अपने नजरियों को आशावादी बनाए रखें। दूसरों की तरक्की से प्रेरणा लेना भी एक अच्छा विकल्प है। जब कोई व्यक्ति किसी क्षेत्र विशेष में दक्षता प्राप्त कर आगे बढ़ जाता है, तो हमें उसका सम्मान करना चाहिए और उसकी प्रेरणा से आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। इसके अलावा, हमें अपनी क्षमताओं का आकलन करना चाहिए और अपनी रुचि को ध्यान में रखकर अपने क्षेत्र का चुनाव करना चाहिए। संतोषी सदा सुखी रहता है, इसलिए हमें संतोष की भावना को अपनाना चाहिए और एकाधिकार की भावना को त्यागना चाहिए।

अक्सर देखने और सुनने में आता है कि कोई भी सफलता या कोई ऐसी वस्तु जो हम प्राप्त नहीं कर सकते और अगर वह हमारे किसी परिचय को मिल गई तो हमें बहुत इच्छा होती है उसे प्राप्त करने की, और यह मनाते हैं कि यह ईश्वर अगर हमें ना मिली तो यह उसको भी ना मिले। यह जो भाव है बहुत हास्यास्पद है। हमेशा स्मरण रहे कि जिस प्रकार नदी के प्रवाह को कोई रोक नहीं सकता, उसी प्रकार हम किसी की उन्नति को बाधित नहीं कर सकते। श्रेयस्कर होगा कि हम उनका सम्मान करें और उनसे प्रेरणा लेकर आगे बढ़ें। किसी विशिष्ट क्षेत्र में किसी का अनुसरण करने से पहले अपनी क्षमताओं का आकलन करें और स्वयं को पहचानें, फिर आगे बढ़ें। एक सामान्य व्यक्ति भी सुखमय जीवन जी सकता है। संतोषी सदा सुखी की उक्ति को ध्यान में रखते हुए, हमें अपने जीवन में संतोष और शांति को महत्व देना चाहिए। साथ ही, हमें यह भी समझना चाहिए कि कोई हमसे श्रेष्ठ भी हो सकता है, इसलिए एकाधिकार की भावना का त्याग करना आवश्यक है।

वास्तविकता स्वीकार करना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। जीवन में उन्नति के लिए ईमानदारी, मेहनत और लगन से प्रयास करना अत्यावश्यक है, किन्तु यह भी समझना आवश्यक है कि परिणाम हमारे हाथ में नहीं है, और मेहनत का फल मिलना न मिलना नियति के हाथों में है। इसलिए प्रयास पर ध्यान केंद्रित करे। यह विश्व सबके लिए निर्मित है, और हर कोई अपने कर्म और भाग्य के अनुसार अपना भाग्य रचता है। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मानसिक संतुलन बनाए रखना भी ईर्ष्या से मुक्ति का एक उपाय है। इन्ही महत्वपूर्ण त्तथ्यो को ध्यान में रखकर जीवन को सकारात्मक दिशा में ले जाकर हम ईर्ष्या से मुक्ति पा सकते है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

ये दाँत दर्द कब मुझे छोड़ेगा

अरुण अर्णव खरे

लेखक व्यंग्यकार हैं।

दाँत में दर्द क्या हुआ कि बचपन में पढ़ी ये पंक्तियाँ शिद्दत से याद आ रही थीं - वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान। निकल कर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान। फिलहाल अपने बाएँ गाल पर हाथ रख कर बिस्तर पर पड़े-पड़े सोच रहा हूँ कि वह आह कैसी रही होगी जिससे कविता निकल कर बहने लगी होगी। सोचते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँच गया हूँ कि वह आह दाँत के दर्द वाली तो कदापि नहीं रही होगी। दो दिन तक इस आह से कविता बहने की उम्मीद में डॉक्टर को भी दिखाने नहीं गया था। असर यह हुआ कि दर्द बढ़ने के साथ ही आह निकलने की फ्रीक्वेंसी भी बढ़ गई लेकिन कविता की पंक्तियाँ न बहना थीं, न ही बहीं। आह, कराह में बदलने लगी। कराह भी ऐसी कि कवि बनने के मेरे सारे अरमान तिरोहित होने लगे। मुझे विश्वास हो चला कि दाँत के दर्द से निकली आह कवि बनने के लिए मुफ़ीद नहीं है। कवि बनने के लिए आवश्यक आह, अवश्य ही किसी और अंग के दर्द से संबंधित रही होगी। वह अंग कौन सा हो सकता है, इसके बारे में सोचने की इजाज़त फ़िलहाल दाँत का दर्द नहीं दे रहा है।

'दर्द बर्दाश्त से बाहर होने लगा तो हारकर डॉक्टर के दर पर मत्था टेकने जाना पड़ा। मत्था टेकने को आप गलत अर्थ और संदर्भ में मत लीजिए। लोग कितना ही कहें कि डॉक्टर मरीजों के लिए देव तुल्य होते हैं लेकिन देवों की तरह वे दो-तीन फूल, बेल-पत्री और पाँच रुपए के सींगदाने से कभी खुश नहीं होते। वे मरीजों की तरफ मुखातिब भी तभी होते हैं जब उनके चैंबर के बाहर बैठा, उगाही करने वाला व्यक्ति ग्रीन सिग्नल दे देता है। अब आप कहेंगे, फिर ऐसा क्यों लिखा तो स्पष्ट कर दूँ कि जब दर्द विदेश में उठा हो और डॉक्टर की फीस डॉलर में चुकाना हो तो सारे देवता याद आ जाना लाजिमी है। देवता याद आएँगे तो मत्था टेकना भी जरूरी है, भले ही आप उनको स्मरण करते हुए मन ही मन टेकें। हुआ भी यही। डॉक्टर की खूबसूरत असिस्टेंट ने सबसे पहले ऊपरी जबड़े के तीन-तीन एक्सरे निकाले फिर मुझसे मुखातिब होकर बोली - तेरह नंबर का दाँत टूट गया है जिस कारण बैक्टीरिया इंफेक्शन बहुत बढ़ गया है। इसे तुरंत निकालना पड़ेगा।'

दाँतों के भी नंबर होते हैं, पहली बार पता लगा। डरते-डरते उस असिस्टेंट नाम की मोहतरमा से पूछा - 'कितना खर्चा आएगा।' उसने मेरी निरीह और सहमी मुख-मुद्रा को नजरअंदाज करते हुए पूरी पेशेवर निर्ममता से उत्तर दिया - इट इज एस्टिमैटेड अराउंड सेवेन हंड्रेड टू नाइन हंड्रेड डालर, फाइनल फिगर विल बी नोन आफ्टर द ट्रीटमेंट। मैंने मन ही मन विदेश गए आम भारतीय नागरिक की तरह सात सौ का अस्सी से गुणा किया, हालाँकि सही राशि जानने के लिए मुझे 84 या 85 से गुणा करना चाहिए था। मैं कर भी सकता था लेकिन गफलत की गुंजाइश के कारण कोई रिस्क लेना नहीं चाहता था। मन वैसे भी इतना कठिन गुणा करने का आदि नहीं था, दूसरा गुणनफल में गलती इंजीनियरिंग की डिग्री पर संदेह जता सकती थी। मैं सीधा सादा इंजीनियर कोई मुखिया जैसे बड़े पद पर तो रहा नहीं, कि लोग मेरी डिग्री पर संदेह करें और मैं चुप रहा आऊँ। डिग्री मेरा गर्व रही है। उस पर संदेह, मतलब मेरे स्वयं के अस्तित्व पर संदेह जो मुझे नाकाबिले बर्दाश्त होता।

बहरहाल डॉक्टर ने चैंबर में प्रवेश किया। आते ही उन्होंने एक उचाट सी दृष्टि तीनों एक्स रे पर डाली और बोले - 'इंफेक्शन आँखों को जोड़ने वाले ब्लड वेसल तक पहुँच गया है, तुरंत दाँत नहीं निकलवाया तो आँखों को भी नुकसान पहुँच सकता है।' डॉक्टर का यह डरावना वक्तव्य आने से पहले ही मैं सात सौ में अस्सी का गुणा कर चुका था। गुणनफल का भान होते ही दाँत के दर्द का एहसास जाता रहा था लेकिन आँखों को नुकसान पहुँचने की बात से दिमाग के तार झनझना उठे थे। तभी डॉक्टर ने पूछा - 'आपने पहले कभी पेनिसिलिन लिया है? उससे किसी तरह के रिएक्शन की शिकायत तो नहीं है।' मैंने मन ही मन कहा कि जब आपकी फीस को रुपयों में कन्वर्ट करने से हुए रिएक्शन को सहन कर लिया तो ये पेनिसिलिन का रिएक्शन भला क्या अहित करेगा। मैंने न में सिर हिलाया ही था कि सिस्टर ने मुँह खोलकर जबड़े नम्ब करने के लिए दो इंजेक्शन ठोक दिए। डॉक्टर ने पाँच मिनट इंतजार किया। उन्होंने जैसे ही दाँत उखाड़ने का अभियान शुरु किया, आँखों से आँसू छलक आए और दिमाग में किसी पुराने फिल्मी गीत की तर्ज पर एक काव्य पंक्ति कौंध गई - ये दाँत दर्द, कब मुझे छोड़ेगा, मेरा गम कब तलक मेरा दिल तोड़ेगा।

अब लगभग पैंसठ हजार में 13 नंबर का प्रिमोलर टूथ निकलवा कर, आँखों से कविता बह जाने की अनुभूति से गदगद हूँ।

राष्ट्र का सर्वांगीण विकास परजीवियों से नहीं अपितु श्रमजीवियों से होगा

ऐसा नहीं है कि खैराती योजनाओं के दुष्परिणामों को विभिन्न जागृत तबके के प्रबुद्ध वर्ग ने नहीं गिनाया हो। ऐसा भी नहीं है कि विभिन्न अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री और मीडिया के प्रबुद्ध वर्ग ने नागरिकों को अकर्मण्यता का पाठ पढ़ाती योजनाओं पर आपत्ति नहीं की हो। लेकिन, लेकिन राजनीति के तमाम कर्णधारों के लिए खैराती योजनाएं का क्रियान्वयन अब सत्ता की गारंटी बन गया है। हालात इतने विकट हो गए हैं कि जब कभी सत्तारूढ़ दाल खैराती योजनाओं के क्रियान्वयन पर रोक लगा देवे, तो उनकी सत्ता में वापसी लगभग असंभव ही होगी। अजीब स्थिति है, विभिन्न राजनीतिक दल एक से बढ़कर एक खैराती योजनाओं के क्रियान्वयन का वादा करते हुए सत्ता में आने का स्वप्न संजोए हुए हैं।

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

जिस प्रकार केंद्र एवं राज्य सरकारें लगातार खैराती योजनाओं का क्रियान्वयन करती जा रही है, उसकी अंतिम परिणति क्या होगी ? इस सवाल पर गौर करना जरूरी है। दरअसल सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने के निमित्त विभिन्न राजनीतिक दलों में जनता जनार्दन को लगातार उपकृत करते रहने की होड़ दिखाई देती है। इसके चलते समाज में मेहनतकश वर्ग पर लगातार बढ़ती महंगाई से जूझने के साथ साथ बैठे ठाले खाने और परिवार चलाने वालों का दायित्व भी आन पड़ा है। जिसके संपूर्ण श्रेय के हकदार विभिन्न राजनीतिक दल ही हुआ करते हैं। ये दल खुलकर जमाने में यह दंभ भरते हैं कि हमने इनके लिए यह किया और उनके लिए वह किया। आजकल की राजनीति बिल्कुल इसी तर्ज पर चल रही है। मेहनतकश कुटा रहा है और सरकार अपनी पीठ ठोक रही है।

ऐसा नहीं है कि खैराती योजनाओं के दुष्परिणामों को विभिन्न जागृत तबके के प्रबुद्ध वर्ग ने नहीं गिनाया हो। ऐसा भी नहीं है कि विभिन्न अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री और मीडिया के प्रबुद्ध वर्ग ने नागरिकों को अकर्मण्यता का पाठ पढ़ाती योजनाओं पर आपत्ति नहीं की हो। लेकिन, लेकिन राजनीति के तमाम कर्णधारों के लिए खैराती योजनाएं का क्रियान्वयन अब सत्ता की गारंटी बन गया है। हालात इतने विकट हो गए हैं कि जब कभी सत्तारूढ़ दाल खैराती योजनाओं के क्रियान्वयन पर रोक लगा देवे, तो उनकी सत्ता में वापसी लगभग असंभव ही होगी। अजीब स्थिति है, विभिन्न राजनीतिक दल एक से बढ़कर एक खैराती योजनाओं के क्रियान्वयन का वादा करते हुए सत्ता में आने का स्वप्न संजोए हुए हैं।

इस विषय को लेकर नागरिकों का एक अत्यंत जागृत वर्ग जिन्हें कि हम पत्रकार, लेखक या विचारक के रूप में जानते हैं, उन्होंने समय-समय पर इतना सटीक लिखा कि हम उनकी कलम के कायल हो गए। लेकिन जैसा कि कहा जाता है कि कलम की ताकत तलवार से अधिक बड़ी होती है, लेकिन वास्तव में क्या ऐसा है ? अब राजनीतिक दलों की खैराती योजनाओं को ही देखिए, इसके दुष्परिणामों को लेकर कितने सवाल उठाए गए, ऐसा भी खुलकर कहा गया कि ऐसी योजनाएं आम नागरिकों को पुरुषार्थ के प्रति हतोत्साहित करते हुए अकर्मण्यता का पाठ पढ़ा रही है। देश में स्वाभिमानी नागरिकों की अपेक्षा सरकार पर आश्रित वर्ग की संख्या बेतहाशा बढ़ती जा रही है।

खैराती योजनाओं के दुष्परिणामों के प्रति भी लगातार आगाह किया गया। लेकिन कहीं से कहीं तक इस सच्चाई को कोई भी राजनीतिक दल या उसकी सरकार समझना नहीं चाहती। जब कभी कोई राजनीतिक दल या सरकार खैराती योजना क्रियान्वित करती है, अधिकांश हितग्राही ऐसी खैरात को जन्म सिद्ध अधिकार की भांति ले लिया करते हैं। इसमें रत्ती भर भी लेतलाली देखते ही देखते जन आंदोलन का कारण बन जाती है। एक बार, केवल और केवल एक बार खैराती योजनाओं का क्रियान्वयन होने पर भी अधिकांश नागरिकों को इसकी आदत पड़ जाती है। आजकल तो विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच एक प्रकार की अघोषित प्रतियोगिता हो रही है कि कौन बड़ा दातार है ?

आश्चर्य का विषय है कि भिक्षावृत्ति को हमारे यहां अच्छी नजरों से नहीं देखा जाता। लेकिन दूसरी ओर सरकार यह दावा करती है कि हम 80 करोड़ से अधिक नागरिकों को मुफ्त राशन दे रहे हैं। परिवार के हर किसी सदस्य को किसी न किसी योजना से लाभान्वित कर रहे हैं। एक प्रकार से देखा जाए तो सरकार निठल्लों के पालन पोषण में लगी है। जिसके चलते उनका वोट बैंक सुरक्षित हो सके। आजकल तो सरकार तमाम हितग्राहियों का सम्मेलन आयोजित कर वाह वाही लूटने में भी लगी दिखाई देती है। इस संदर्भ में एक मासूम सवाल यह भी उत्पन्न होता है कि जब सरकार के पास खैरात बांटने को इतना पैसा है तो वह जनता से भारी भरकम टैक्स क्यों लेती है ?

दरअसल होता यह है कि सरकार एक जेब से निकालती है तो दूसरी जेब में डालती है। माना कि सर्वहारा वर्ग इससे वास्तव में लाभान्वित होता है। लेकिन यह समझ से परे है कि सरकार उसे स्वावलंबन के मार्ग पर अग्रसर करने के लिए सहायक सिद्ध क्यों नहीं होती? इस वर्ग को आश्रित ही क्यों रहने देना चाहती है ? वास्तव में क्षणिक लाभ के लिए शारीरिक और मानसिक श्रम शक्ति का ऐसा अपमान अक्षम्य ही कहा जाना चाहिए। लेकिन यह हकीकत है कि ऐसी आवाज राजनीति के नक्कारखाने में तूती से अधिक कुछ सिद्ध नहीं होती।

आजकल की राजनीति में तो मैनेज करने की परंपरा सी स्थापित होने लगी है। कल तक तो केवल राजनीति में ही राजनीति हुआ करती थी। लेकिन देखते ही देखते प्रचलित राजनीति के पट्टी पहाड़े अन्य क्षेत्रों में भी विस्तार पा गए। आज आम नागरिक इस भूल भुलैया में है कि वास्तव में समाज और समाजों से मिलकर बना देश सही दिशा में आगे बढ़ रहा है या नहीं ? कहीं ऐसा तो नहीं कि यह जो विकास के नाम पर जहां-जहां और जो-जो उठापटक हो रही है, वास्तव में हमें पतन की गहरी खाई की और धकेल रही है। बहुत तेजी के साथ हम अपनी संस्कृति से कोसों दूर होते जा रहे हैं।

शहरी एवं ग्रामीण परिवेश में देखते ही देखते परिवर्तन के नाम पर नई संस्कृति का आँखें मूंदकर वरण किया जाने लगा है। आधुनिकता की अंधी दौड़ में हर कोई भाग रहा है। जिसके चलते आम आदमी का आचार विचार और व्यवहार काफी हद तक बनावटी रूप धारण कर रहा है।

हर कोई अपने और अपनों के लिए ही जी रहा है। परदुःखकातरता का भाव विलुप्ति की कगार पर है। बीते समय में धन संपन्न वर्ग असहाय वर्ग की स्वेच्छा पूर्वक सहायता करते हुए अंतर्मन में असीम आनंद की दिव्य अनुभूति से दो-चार हुआ करता था। आज ऐसा बहुत कम दिखाई देता है। सरकार जो दातारी भाव अपना रही है, उसके चलते विशेष कर मेहनतकश वर्ग के मन के किसी कोने में आक्रोश भी घर कर रहा है। स्वाभाविक रूप से विचार आता होगा कि एक तरफ तो वह अनिवार्य अंशदान की पूर्ति कर रहा है तो दूसरी तरफ उस अंशदान से विभिन्न राजनीतिक दल राजनीतिक स्वार्थसिद्धि की प्रक्रिया में तल्लीन हैं। यही कारण है कि आजकल संभ्रांत वर्ग राजनीति से लगभग परहेज कर कर ही चलता है।

इन हालातो के चलते विभिन्न सामाजिक संगठनों को ही अपने समाज के आत्म सम्मान की खातिर राजनीतिक दल एवं सरकार के तमाम प्रलोभनों को ठुकराने की पहल करनी चाहिए। दरअसल अब तमाम हितग्राहियों की भी यह जिम्मेदारी है कि वह अपने आत्म सम्मान और स्वाभिमान की रक्षा की खातिर पुरुषार्थ को तवज्जो दे।

कुल मिलाकर एक ऐसा जन आंदोलन भी होना चाहिए जिसके चलते खैराती योजनाओं के माध्यम से सत्ता में आने का सपना देख रहे राजनीतिक दलों को सबक सिखाया जा सके। इसके लिए आम नागरिकों में नागरिक भाव का जागृत होना अत्यंत आवश्यक है। इस दिशा में राजनीतिक दलों से तो कोई उम्मीद नहीं की जा सकती, इसलिए सामाजिक संगठनों को ही इस विषयक पहल करना चाहिए।

घुमक्कड़ों के ट्रैकिंग वीडियो और स्मृति की खुशबू

ट्रैवलॉग चर्चा

ब्रजेश कानूनगो

लेखक साहित्यकार हैं।

हमारे गृह नगर देवास में एक पहाड़ी है जिसको माताजी की पहाड़ी कहते हैं। यहां देवी चामुंडा और तुलजा भवानी के अतिरिक्त अन्य भी बहुत सारे मंदिर हैं। ब्रिटिश इतिहासकार ईएम फास्टर ने अपनी पुस्तक हिल आफ देवी में इसका उल्लेख भी किया है। ऊपर एक परिक्रमा मार्ग भी है। पहाड़ी पर जाकर देवास के लोग नित्य व्यायाम की दृष्टि से सुबह की सैर करते हैं। जिनकी आस्था होती है उन्हे देवी के दर्शन भी हो जाते हैं। जिन्हे केवल व्यायाम की दृष्टि से जाना होता है तो उनको सुबह की ताजी हवा के अलावा थोड़ी सी कसरत का लाभ भी मिल जाता है।

पहाड़ी के ऊपर तक जाने के लिए करीब पांच सौ सीढ़ियां रही होंगी। एक रपट मार्ग भी रहा है जिस पर जीप जैसी गाड़ियां उचित अनुमति के बाद ऊपर ले जाई जा सकती थीं। यह मैं अपने बचपन की स्मृति बता रहा हूं। अब तो वहां रोप वे बन गया है और श्रद्धालु टिकिट खरीद कर भी पहाड़ी के ऊपर जाने लगे हैं। बचपन में सीढ़ियों और रपट पर दौड़ते हुए मिनटों में ऊपर चढ़ जाया करते थे। इन दिनों घुम्मकड़ों के ट्रेवल वीडियो देखते हुए उनको ट्रेकिंग करते हुए भी कई रोमांचक वीडियो देखे हैं। हमे लगा कि बचपन में जब हम गृहनगर की पहाड़ी पर चढ़ा करते थे वह भी एक मायने में ट्रेकिंग ही तो था। सीढ़ी मार्ग होने के बावजूद लोगों ने कुछ ऐसे दुर्गम रास्ते खोज लिए थे जिनसे होकर हम लोग ऊपर पहुंचा करते थे। इसे खड़े पहाड़ चढ़ना कहते थे। ट्रेकिंग की परिभाषा भी यही है कि कटीले, गिट्टियों, झाड़ियों भरे दुर्गम कठिन रास्तों से होते हुए पहाड़ों के ऊपर चढ़ते जाना। हमारे बुजुर्ग लोग हमसे कहा करते थे कि आप नित्य थोड़ा पहाड़ी पर घूम आया करें, एक दो चक्कर लगा लिया करें सुबह शाम। किंतु यह हिदायत देना भी न भूलते कि खड़े पहाड़ न चढ़ना। पर उत्साह और जोश से भरा एक ट्रैकर कहां ऐसी चेतावनियों को सुनता है, हम खड़े पहाड़ चढ़ने का जोखिम उठा ही लेते। अब समझ में आया कि हम भी बचपन में छोटे मोटे ट्रैकर रहे हैं।

स्कूल कॉलेज के दिनों में एनसीसी (राष्ट्रीय छात्र सेना) का कैडेट रहते हुए भी कैंपिंग और ट्रैकिंग के कुछ अनुभव हुए थे। तब उसमें जो कुछ सिखाया जाता था उसमे दशहरा दिवाली की छुट्टी में कैंपिंग होता था, हम खूब आनंद उठाते थे, ट्रैकिंग भी होता था और नकली युद्ध भी लड़ा जाता था। दो ग्रुप बना दिए जाते, जो एक दूसरे ग्रुप पर अटैक के लिए दो तीन किलोमीटर दूर विपरीत दिशाओं से ट्रैकिंग करते आगे बढ़ते रात को निकलते। घमासान युद्ध का अभ्यास होता। आज जब यूट्यूब पर हम घुम्मकड़ों के ट्रैकिंग वीडियो को देखते हैं तो असली ट्रैकिंग के रोमांच से भर उठते हैं।

बहुत सारे ऐसे ट्रेवलर्स हैं जिनको ट्रैकिंग करते देखकर बहुत अच्छा लगता है। मुझे कुछ ब्लॉगर्स के नाम याद आते हैं जिनके वीडियो देखकर मन प्रसन्न हो जाता है, जैसे डेल फिलिप (Dale Phillip) एक ब्लॉगर हैं, स्कॉटलैंड के हैं, अंग्रेजी में अपने वीडियो बनाते हैं। श्रीलंका में वह दो-तीन बार गए हैं। श्रीलंका के सारे बड़े शहरों में तो घूमते ही हैं लेकिन कुछ ट्रैकिंग में श्रीलंका के पहाड़ों में अकेले निकल जाते हैं, ना तो उनको तमिल आती है न सिंहली, न वहां के पहाड़ी लोगों को अंग्रेजी समझती है। गूगल ट्रांसलेट से भी बात करते हैं लेकिन गूगल ट्रांसलेट भी ऐसी जगह पर काम नहीं करता। हम जानते हैं मुस्कुराहट और सद्भाव की अपनी अलग वैश्विक भाषा होती है, किसी तरह काम निकल ही जाता है। तो वहां इसी तरह से कुछ बच्चो के साथ वे श्रीलंका की पहाड़ियों पर ट्रैकिंग करते हैं। बहुत अच्छा दिलचस्प वीडियो उन्होंने बनाया है। उसमें प्रकृति का

वास्तविक सौंदर्य हमको बहुत नजदीक से दिखाई देने लगता है। दरअसल ट्रैकिंग ही एक ऐसा माध्यम है जिसमें हम प्रकृति से सीधे जुड़ जाते हैं, इस दरम्यान हवा, चट्टान, वनस्पति, आकाश, मिट्टी, पानी, बादल, एक दूसरे से गले लगते हैं। मनुष्य और प्रकृति एक दूसरे से आत्मीय संवाद करने लगते हैं। ट्रैकर के माथे और देह को भिगोता संघर्ष का पसीना हम दर्शकों को रोमांचित करने लगता है। वीडियो देखते हुए प्रकृति सीधे हमसे बातचीत करने लगती है और सीधे दिल में उतरती चली जाती है। ऐसे ही डेल फिलिप एक बार जंगलों में ट्रैकिंग करते हुए रेलवे पटरी के साथ साथ आगे बढ़ रहे होते हैं तो उनका पांव थोड़ा मुड़ जाता है, पांव में चोट आ जाती है। लेकिन यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि चोटिल परदेसी ब्लॉगर को एक स्थानीय उनके चाहने वाले ने अपने परिवार के साथ घर में अतिथि की तरह स्थान देकर उनकी सेवा सुश्रा की। उनको कोई 15 दिन वहां रहना पड़ा। पांव में काफी सूजन रही। चलने फिरने में दिक्कत आई। इस घटनाक्रम का भी डेल ने वीडियो बनाया। हमें कई बार चिंता होती है कि ये ब्लॉगर अकेले अकेले अपरिचित क्षेत्रों में भटकते रहते हैं, दुर्भाग्य से कल कहीं कुछ दुर्घटना या अनहोनी घट जाए तो क्या होगा? लेकिन यह दुनिया बहुत खूबसूरत है, यहां के लोग बहुत खूबसूरत हैं, प्रेम, सम्मान और सौहार्द्र की भाषा और आचरण सबसे महत्वपूर्ण होता है, सब एक दूसरे का दुख दर्द जान लेते हैं। ऐसा कभी नहीं होता कि कहीं कोई मनुष्य अकेला पड़ जाए, समय आने पर बहुत लोग उनके साथ होते हैं, शुभचिंतक हो जाते हैं, सहयोग करते हैं। और फिर हम दर्शकों की शुभकामनाएं तो उनके साथ होती ही हैं जिनके लिए वे जोखिम उठाकर हमारे लिए अपने अनुभव साझा करते हैं।

ट्रैकिंग के और भी अनेक व्लॉगरों के वीडियो हमने देखे हैं खासतौर पर नेपाल, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश सहित अन्य देशों में पहाड़ी इलाकों में ग्रेब्रियल ट्रेवलर, दाउद अकुंजादा, ओम द्विवेदी, बैग्स पैकर्स फैमिली के परिवार के साथ ट्रैकिंग का मानस आनंद लेते रहे हैं। उधर पाकिस्तान के भारत से लगे हिमालय क्षेत्र भी काफी सुंदर हैं। गिलगिट आदि क्षेत्रों के मनोरम दृश्य को देखते हुए लगता ही नहीं कि यह भारत नहीं है। दाउद अकुंजादा उस खूबसूरत स्थल की यात्रा में सुंदर फिल्मांकन करते हैं। एक ब्लॉगर शायद अंकित (ड्रीम चेसर) के वीडियो में हमने देखा कि कुछ ऐसे नव विकसित कैंपिंग स्थल तो ऐसे भी हैं जहां से पर्यटक पाकिस्तान से भारत के दृश्यों और हलचल को निहार सकते हैं और पाकिस्तान से भारत के मनोरम दृश्य का आनंद उठा पाते हैं। कुछ स्थान ऐसे भी हैं जिनके बीच एक खूबसूरत नदी होती है और दोनों किनारों पर खड़े पर्यटक एक दूसरे का अभिवादन कर सकते हैं।

ट्रैकिंग के बारे में यह सब लिखने पर कुछ मित्र पूछ सकते हैं कि हम ऐसा कैसे कर पा रहे? कई बार यह होता है कि जिस क्षेत्र में हमने कुछ नहीं किया हो उस विषय पर भी हम लिखने की कोशिश करते हैं। हमारे इधर एक कहावत है, शादी नहीं की तो क्या, बारात में तो गए ही हैं। बारात में जाकर भी शादी का अनुमान लगाया जाता रहा है। समझ लीजिए कि हम घुमक्कड़ ना सही परंतु घुम्मकड़ों के बनाए वीडियो तो देखते हैं, उनके अनुभव से एकाकार होकर अनुमान लगाते हैं। कुछ यात्राएं हुई हैं, भारतीय और पश्चिम की संस्कृति और परिवेश को भी थोड़ा बहुत अपने कनाडा प्रवास से जाना समझा है, इसी से अनुमान लगाने में अधिक कठिनाई नहीं आती। यह बहुत सारे जो हमारे ब्लॉगर मित्र हैं, जो इतने खूबसूरत वीडियो बनाते हैं कि देखते हुए हम उसमें डूब से जाते हैं और हमको लगता है कि बस हम ही घूम रहे हैं। अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने की आकांक्षा इसे शब्दों में बदलने लगती है। वीडियो बनाने वाले हमारे इन मित्रों को हम बहुत धन्यवाद देते हैं और शुभकामनाएं भी कि वे खूब यात्राएं करें और घर बैठे दुनिया की सैर हमें भी नित्य करवाते रहें।

नया परिवेश, नया परिवार - ओडिशा हमार

यात्रा संस्मरण

गौरव अवस्थी

दो महीने पहले श्रीयुत् अशोक पुजाहारी जी की कॉल आई-'कविजी (पद्मश्री हलधर नाग को कोसल क्षेत्र में आपसी बोलचाल में यही संबोधन देते हैं) के काव्य पर नेशनल सेमिनार कर रहे हैं, आपको भी आना है'। उस वक्त इस फोन कॉल का कोई खास मतलब नहीं निकाल पाया। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, आमंत्रण उतना ही गहराता गया। कोई 15 दिन पहले टिकट के लिए फिर कॉल आई-'कहा गया, अपना आधार कार्ड भेज दीजिए।' आदेश का पालन करना ही था। डेट लॉक हुई। फिर एसएन पांडा जी ने व्हाट्सएप पर टिकट भेज दिया। पांडा जी से कोई परिचय नहीं पर उनके आग्रह में विनम्रता थी। पांडा जी कोई साधारण इंसान नहीं, कृष्णा विकाश ग्रुप ऑफ़ इंस्टिट्यूट्स की बरगढ़ ब्रांच के डायरेक्टर हैं। ओडिशा और छत्तीसगढ़ का यह बड़ा शैक्षणिक ग्रुप है। विभिन्न शहरों में इसकी 22 शाखाएं हैं और रायपुर में पहला विश्वविद्यालय बन रहा है। इसके संस्थापक तेलुगु भाषी डी मुरली कृष्णा हैं। अब संबलपुरी। पांडाजी से भी ज्यादा विनम्र और सरल।

खैर, बात आई-गई। बरगढ़ यात्रा सर पर सवार थी और सर पर आ भी गई ! ज्यों-ज्यों तारीख नजदीक आती जा रही थी, मन में कई तरह के सवाल उठने लाजमी थे। उठे भी। मथे भी। वह दिन भी आ गया और समय भी, जब यात्रा पर निकलना था। मन में अनेक संशय। सबसे ज्यादा भाषा को लेकर। उहापोह। कैसे क्या करेंगे? बैसवारे (अवध अंचल के रायबरेली-उन्नाव का एक क्षेत्र विशेष) की नाक बचेगी या कटेगी ! क्यों? क्योंकि हम ठहरे पत्रकार। पेपर में लिखते तो उमर बीत गई पर 'पेपर प्रेजेंटेशन' का कोई अनुभव कहां? वैसे भी, पेपर-वेपर का काम तो विद्वानों और प्रोफेसरों का है। पत्रकार को इससे क्या मतलब? फिरभी, अपने मन मुताबिक विषय पर एक टूटा-फूटा आलेख जरूर तैयार किया। वही आधार था।मन अनमना। हिम्मत डाट निकल पड़े एक नई दुनिया से साक्षात्कार करने। मन में धुकधुकी। तन में झुरझुरी। बार-बार मन में आए- अकेला चना क्या भाड़ फोड़ेगा? मना क्यों न कर दिया? आदि..आदि..।। लखनऊ से यात्रा शुरू होने के पहले ही सचिन चौधरी का फोन आया-'मैं आपको एयरपोर्ट के बाहर मिलूंगा.. गाड़ी नंबर फलां-फलां..। कृष्णा विकाश संस्थान के मैनेजर HR किरन आचार्य जी ने भी बात की। रात पहुंचने के समय हम लखनऊ में ही थे। महानदी कोल्डफील्ड्स में महाप्रबंधक साहित्यकार-अनुवादक डॉ दिनेश कुमार माली जी फोन पर पूछे-कहां हैं? फ्लाइट लेट होने की बात जान कर उन्होंने अनुमति के अंदाज में पूछा-' फिर हम लोग डिनर कर लें? 9:40 की फ्लाइट रात 11 बजे झारसुढ़ा पहुँची। स्टार एयर के इस क्राफ्ट में 80 फ़ीसदी सीटें खाली। क्राफ्ट के अनाउंसमेंट से ही पता चला कि स्टार एयर की यह सर्विस ओडिशा सरकार द्वारा दिए जा रहे

अनुदान से संचालित है। ओडिशा के पश्चिमी भाग को देश दुनिया से जोड़ने के लिए 'न्यू डेस्टिनेशन पॉलिसी' ने यह एयरपोर्ट दिया और कुछ फ्लाइट्स भी।

ओडिशा के इस औद्योगिक शहर में अभी कोरोना काल में ही नया एयरपोर्ट बना है। कोई भीड़भाड़ नहीं। बाहर 2-4 टैक्सी वाले। टैक्सी बुकिंग बूथ खुला हुआ। दो एक साथी यात्रियों ने टैक्सी बुक कराई। बाकी को लेने के लिए उनकी अपनी गाड़ियां आई हुई थीं, जैसे हमें। यहां वेदांता समूह का बड़ा पावर प्लांट है। किलोमीटरों फैला हुआ। बीच में पड़ने वाले संबलपुर में महानदी कोलफील्ड्स का मुख्यालय। बाहर ही सचिन चौधरी मिल गए। सारथी श्रेष्ठ थे दीपक प्रधान। झारसुढ़ा से बरगढ़ की दूरी 100 किलोमीटर है। रास्ते में सचिन और दीपक भाई से बातचीत में ही संशय के पहाड़ पिघलने लगे। बातों-बातों में इस क्षेत्र विशेष की खूबी और खासियत पता चलनी शुरू हो गई। दिन लखनऊ में बिना कुछ ठोस खाए बीता था, इसलिए भूख अपने पर। सचिन ने खाने को पूछा तो कट्टी साध गए। हां न ना ! सचिन भाई ने 'मौन' सहमति मानी और रात 12 बजे एक ढाबे के बाहर कार के पहिए रुक गए। नाम था-'बीकानेर वाले चौधरी दा ढाबा'। इतनी दूर ओडिशा में राजस्थानी ढाबा ! पापी पेट जो न कराए। कहां-कहां भगाए? वेटर से खानपान समझा। अंततः हाफ प्लेट पीली दाल और हाफ प्लेट सब्जी मंगाने में ही भलाई समझी। हाफ प्लेट में ही इत्ती क्वांन्टिटी कि तीन लोग भरपेट खाएं। ढाबा मालिक ठहरे बीकानेर वाले तो सब्जी स्पाइसी होनी ही थी। थी भी।

बरगढ़ पहुंचते-पहुंचते बज गए रात के एक। पहुंचने के पहले ही रूम पार्टनर डॉ सी जयशंकर बाबू के मोबाइल से घंटी घनघनाई-'कमरा अंदर से लॉक नहीं है।आपके लिए दरवाजे खुले हैं।' श्री जयशंकर जी पांडिचेरी विश्वविद्यालय में हिंदी के विभागाध्यक्ष हैं। माली जी के माध्यम से उनसे फोन पर बातचीत पहले की थी। आमने-सामने की पहली मुलाकात यहीं होनी थी। रात गहरा जाने के चलते कमरे के अंदर पहुंचने पर सिर्फ औपचारिक हाय हेलो ! ! आंखों पर गमछा ढांपे वह सो गए और हम भी। बगल के कमरे में माली जी और उनकी धर्मपत्नी शीतल भाभी थीं। अंगुल (भुवनेश्वर) से प्रोफेसर शांतनु कुमार भी सपत्नीक (ऊषा भाभी) माली जी के साथ इस सेमिनार का हिस्सा बनने आए हैं। सुबह यह सुनकर थोड़ी तसल्ली हुई। उनसे पहले का परिचय था क्योंकि प्रोफेसर शांतनु 2022 के 'द्विवेदी मेले' में रायबरेली आ चुके थे। अलसाई सुबह को शुरू हुई चहल-कदमी और चाय पर मेल-मुलाकात का दौर।

डॉ माली ने पहला परिचय कराया-'यह हैं कालिंदी कॉलेज (नई दिल्ली) की प्रोफेसर आरती पाठक और आप नागपुर से डॉ पूनम मिश्रा'। औपचारिक अभिवादन और चाय की चुस्की के बीच हलधर नाग की कविताओं का अंग्रेजी में सबसे पहले अनुवाद करने वाले श्री सुरेंद्रनाथ भी आ गए। सबसे प्रारंभिक परिचय ही प्रगाढ़ता की ओर ले चला। बातों-बातों में संशय के बादल छंटने लगे। थोड़ी देर की औपचारिकता के बाद नए परिवेश में नया परिवार सा बनने लगा। ओडिशा का यह इलाका छत्तीसगढ़ से लगा हुआ है। इस इलाके में हिंदी बोलने-समझने वालों की संख्या पर्याप्त है। या यों कहें, सब हिंदी बोलते समझते हैं।

कोसली-संबलपुरी भाषा के शब्दों में हिंदी ऐसे मिक्सड है जैसे दाल में नमक या चाय में चीनी। इसीलिए भुवनेश्वर वाले कोसली भाषा को अपने परिवार की भाषा नहीं मानते। ओड़िया क्लिष्ट भाषा है और कोसली देशज रूप लिए। कहा जाता है कि कोसली के कई शब्दों के अर्थ ओड़िया भाषी नहीं समझ पाते ! ! ओड़िया समाज कोसली को बोली मानता है और संबलपुरी समाज भाषा। भाषा के आधार पर क्षेत्रीय संघर्ष की सुगबुगाहट भी जब-कब सुनाई पड़ जाती है। ऐसे में राजनेताओं को संतुलन बनाने में कड़ी कवायद करनी पड़ती ही रहती है। यह उद्घाटन सत्र में मंत्री-सांसद के संबोधन में झलकी भी।

इस इलाके में रात से बारिश हो रही थी। सुबह भी बूंदाबांदी चरम पर थी। गेस्ट हाउस के बारिश में नहाए हरे-भरे परिसर को अपने मोबाइल कैमरे में हर कोई कैद करने की कसरत में जुटा था। चाय पीकर नहाने-धोने की तैयारी ही थी कि सेमिनार की मुख्य आयोजक संस्था अभिमन्यु साहित्य सांसद (घेंस) के सर्वेसर्वा अशोक पुजाहारी के सहायक प्रोफेसर पुत्र शुभ्र सौरांशु और सोभा प्रधान लोककवि रत्न हलधर नाग को लेकर गेस्ट हाउस में दाखिल होते हैं। कविजी अपनी पारंपरिक वेशभूषा धोती-बनियान में। हाथ में एक झोला। सेमिनार के उद्घाटन का घोषित टाइम 9 बजे का था। वास्तविक 10 बजे। सुई 10.15 पर पहुंची होगी, अशोक जी का फोन आया- सभागार में आ जाइए। मंत्री जी (केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान एवं राज्य के उच्च शिक्षा मंत्री सूरज सूर्यवंशी) आने वाले हैं। गेस्ट हाउस से सभागार बस 50 कदम दूर। तैयार होकर हम सब थोड़ी ही देर में सभागार में हाजिर। हालांकि, मंत्री-सांसद आए वह 12 बजे। नेताओं का लेट आना दस्तूर है। दूसरे शब्दों में मजबूरी ! ! सभागार में साहित्य संसद के सुशांत कुमार मिश्रा की लपककर मिलने की अदा मन को भा गई। फिर शुरू हुआ औपचारिक परिचय..आईआईएम-संबलपुर के प्रोफेसर सुजीत पुरसेठ, केंद्रीय विद्यालय में शिक्षक राजमणि साहू, प्रोफेसर बलराम पांडा, सामाजिक कार्यकर्ता उमेश प्रधान, संगीतज्ञ सुरेंद्र साहू, हेमवती नंदन बहुगुणा केंद्रीय विवि गढ़वाल के शोधछात्र एवं कोसल प्रदेश निवासी दिवाकर साहू, गढ़वाल विवि की शोधार्थी पी अंजलि..आदि। सब बौद्धिकता से भरपूर। प्रोफेसर सुजीत हैं तो अर्थशास्त्र के प्रोफेसर लेकिन कमाल के इतिहासज्ञ। क्षेत्र का इतिहास जुबान पर। राजमणि जी ओजस्वी वक्ता-कवि दोनों।

2 दिन तक चले इस सेमिनार के पांच सत्रों और हलधर संगीत संध्या में विभिन्न तबकों और बच्चों से मेल मुलाकात ने सैकड़ो किलोमीटर की दूरी को दरकिनार कर दी। मिनी हलधर नाग बने अस्मी पांडा हों या कवि की कविता अछिया (अछूत) पर आधारित नृत्य नाटिका में शबरी की भावभरी भूमिका निभाने वाली छात्रा स्नेहानाथ या वैष्णवी साहू या अन्य। सबसे मिलकर फोटो खिंचाई ताकि सनद रहे..। मन में उमंग थी। तरंग थी। उत्साह था। उछाह था। सेमिनार के समापन के बाद घेंस (हलधर नाग का जन्मस्थान और अशोक जी का पैतृक स्थान) की यात्रा कोसल प्रदेश से नजदीकियों के अहसासों से भर गई। बैदेही भाभी (श्री अशोक पुजाहारी जी की धर्मपत्नी) की सपरिवार आत्मीय आवभगत कैसे भूली जा सकती है। इस स्थान का सत्तावनी क्रांति (प्रथम स्वाधीनता संग्राम 1857) का वैसा ही इतिहास जैसे अवध के रणबांकुरों का। ओडिशा के पश्चिमांचल में शामिल 10 जनपद के लोग अपने को कोसलवासी कहते हैं। कोसल का अर्थ है मां कौशल्या का घर। भगवान राम की ननिहाल। इस लिहाज से भी हम अवधपुरीवासी अपने ननिहाल में थे। थोड़ा समय बीतते और इतिहास समझते ही मन में उबाल आया-ननिहाल में क्या शर्माना? क्या सकुचाना?

सेमिनार के उद्घाटन सत्र में ज्यादातर के संबोधन कोसली में ही हुए। कोसली एक तरह से हिंदी की सहोदरी ही है। कोसली भाषा को अगर आप ध्यान से सुनें तो उद्बोधन के अर्थ आसानी से समझ आ जाते हैं। 48 घंटे के संग-साथ में एक नए परिवार का निर्माण निःसंदेह इस जीवन की उपलब्धि है। संकोच के सारे तटबंध टूट गए और अनौपचारिक बातों ने दिल को दिल से मिला दिया। वह एक मशहूर शेर ऐसा ही है न- हम अकेले ही चले थे जानिबे मंजिल मगर लोग जुड़ते गए औ कारवां बन गया.. बरगढ़-ओडिशा के इस सफर के बाद इस शेर में हम बदलाव कर रहे हैं, मुआफी के साथ- 'लोग मिलते गए और परिवार बन गया..' पता नहीं क्यों हमें, कारवां 'कौरव' फेमिली का लगता है और परिवार 'पांडवों' का..सही हो तो समर्थन करें अन्यथा क्षमा..!!

सुनील लाटा बैतूल और प्रियंका करचाम होंगी सारनी एसडीओपी

बैतूल। मध्यप्रदेश के गृह विभाग ने बैतूल के एसडीओपी पद की कमान पूर्व में जिले में पदस्थ रहे निरीक्षक सुनील लाटा को सौंपी है। बैतूल एसडीओपी शालिनी परस्ते का तबादला हरदा कर दिया गया है। तबादला सूची में सारनी एसडीओपी का कार्यभार प्रियंका करचाम को सौंपा गया है, जबकि सारनी में पदस्थ एसडीओपी रोशन जैन का तबादला भैरुंदा कर दिया गया है। उप पुलिस अधीक्षक अजाक बैतूल शिखा भलावी का तबादला कर एसडीओपी गंजबासौदा पदस्थ कर दिया गया है। रतलाम में पदस्थ नगर पुलिस अधीक्षक दुर्गेश आर्मी को उप पुलिस अधीक्षक महिला सुरक्षा बैतूल पदस्थ किया गया है।

अस्पताल की सुधरेगी व्यवस्था, डॉक्टर की कमी भी होगी पूरी : प्रभारी मंत्री

प्रभारी मंत्री पहुंचे ताप्ती मंदिर, किए दर्शन

बैतूल/मुलताई। पवित्र नगरी में अधिवक्ता संघ के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने पहुंचे लोक स्वास्थ्य एवं प्रभारी मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में बस दुर्घटना में घायल मरीजों को देखने को देखने पहुंचे, इसके उपरांत वह ताप्ती मंदिर पहुंचे, जहां उन्होंने मां ताप्ती की पूजा अर्चना कर मां ताप्ती का दर्शन लाभ लिया। प्रभारी मंत्री प्राचीन ताप्ती मंदिर भी गए, इस दौरान विधायक चंद्रशेखर देशमुख, उपेंद्र पाठक, दिनेश कलभोर आदि भाजपा कार्यकर्ताओं ने उन्हें मां ताप्ती की छायाचित्र भेंट की इस दौरान नगर पालिका अध्यक्ष वर्षा गडेकर भी उनके साथ थी। प्रभारी मंत्री ने अस्पताल में डॉक्टरों की कमी के सवाल पर पत्रकारों से कहा कि पूर्ववर्ती सरकारों ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि जनसंख्या की तुलना में मेडिकल कॉलेज खोले जाए ताकि अधिक से अधिक डॉक्टर मिले। लेकिन अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जिले स्तर पर अनिवार्य रूप से मेडिकल कॉलेज प्रारंभ करने की, जो योजना क्रियान्वित की है, उसके चलते प्रदेश में मुख्यमंत्री मोहन यादव के मार्गदर्शन में मेडिकल कॉलेज खुल रहे हैं। आने वाले भविष्य में डॉक्टरों की संख्या बढ़ेगी, तो डॉक्टरों की कमी की समस्या से निजात मिलेगी। उन्होंने कहा कि हमने अस्पतालों में सेवा देने के लिए डॉक्टर को मुंह मांगा पैकेज देने की योजना भी बनाई है। जिसके चलते डॉक्टरों की पद स्थापना अस्पतालों में की जा रही है। आने वाले समय में डॉक्टरों की संख्या बढ़ेगी। प्रभारी मंत्री ने अस्पताल में जो जरूरी व्यवस्था की कमी है उसे सुधारने और सरकारी अस्पताल में रिक्त पदों पर डॉक्टरों की नियुक्ति करने का आश्वासन दिया। इसके उपरांत अधिवक्ता संघ के शपथ ग्रहण कार्यक्रम में शामिल होने के लिए रवाना हुए।

भीमपुर में सिकल सेल को लेकर हुआ जागरूकता प्रशिक्षण

बैतूल। बचपन से ही यदि गंभीर बीमारियों की पहचान और समझ दी जाए, तो कई जिंदगियां समय रहते बचाई जा सकती हैं। सिकल सेल जैसी अनुवांशिक बीमारी पर जानकारी और जागरूकता जरूरी है, ताकि इसका समय रहते इलाज और नियंत्रण संभव हो सके। इसी उद्देश्य को लेकर आज भीमपुर में स्वास्थ्य विभाग द्वारा एक विशेष सिकल सेल प्रशिक्षण और जागरूकता सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें स्वास्थ्यकर्मियों से लेकर छात्र-छात्राओं तक को गंभीरता से प्रशिक्षित किया गया। इस प्रशिक्षण का नेतृत्व सिकल सेल जिला नोडल अधिकारी डॉ. अंकिता सिते और डॉ. राजेश परिहार ने किया। उनके साथ भीमपुर खंड चिकित्सा अधिकारी, बीपीएम और बीईई भी इस आयोजन में उपस्थित रहे।कार्यक्रम के दौरान डॉ. अंकिता सिते द्वारा सिकल सेल से बचाव, लक्षण, सिकल सेल पॉजिटिव व्यक्तियों की पहचान, उनके लिए उपचार की प्रक्रिया एवं इस बीमारी की रोकथाम के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई।

वर्ष 2047 तक विकसित भारत का संकल्प पूरा होगा, जिसका नेतृत्व हमारी बेटियां करेंगी : प्रभारी मंत्री

जिले के 1127 छात्रों को मिली लैपटॉप के लिए 25-25 हजार की राशि

•प्रभारी मंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने मेधावी छात्रों को वितरित की लैपटॉप की राशि

बैतूल। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने शुक्रवार को कुशुभाऊ ठाकरे अंतरराष्ट्रीय सभागार भोपाल से प्रदेश के 94 हजार 324 विद्यार्थियों को लैपटॉप के लिए 25-25 हजार की राशि का अंतरण किया। जिला स्तरीय कार्यक्रम लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा तथा जिले के प्रभारी मंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल के मुख्य आतिथ्य में जेएच कॉलेज में आयोजित हुआ। प्रतिभाशाली विद्यार्थी प्रोत्साहन योजना के तहत लैपटॉप के लिए 25-25 हजार की राशि से जिले के 1127 छात्र लाभान्वित हुए हैं। आयोजित कार्यक्रम में जिले के प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने छात्रा अक्षिता मालवीय, नंदिनी राठौर, मयंक बेले, लक्ष्मी अतुलकर, स्वाति यदुवंशी, अनीशा बैरागी, लीना यादव, नेहा, रुचि वागद्रे, मानसी पवार को सांकेतिक रूप से चेक और प्रमाण पत्र का वितरण कर सम्मानित किया। इस अवसर पर विधायक आमला डॉ.योगेश पंडाग्रे, विधायक मुलताई चंद्रशेखर देशमुख, विधायक घोड़ाडोंगरी श्रीमती गंगाबाई उईके, अध्यक्ष जिला पंचायत राजा पवार, उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वतीबाई बारस्कर, जिला योजना समिति के सदस्य सुधाकर पवार तथा कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, पुलिस अधीक्षक निश्चल झारिया, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षत जैन, अपर कलेक्टर राजीव नंदन श्रीवास्तव, जिला शिक्षा अधिकारी अनिल सिंह कुशवाहा, सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विवेक पांडे सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी और उनके अभिभावक उपस्थित रहें। प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश की बेटियां हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। ऑपरेशन सिंदूर में बेटियों ने अपने शौर्य और पराक्रम का अद्भुत परिचय देते हुए देश को गौरवान्वित किया है। नारी वंदन अधिनियम के तहत अब एक तिहाई सांसद और विधायक हमारी बेटियां होंगी। आज जेएच कॉलेज के सभागार में 75 प्रतिशत से अधिक बेटियां मौजूद हैं। जिसे देखकर मन बहुत प्रसन्न और गदगद हो रहा हैं। वर्ष 2047 तक भारत विकसित भारत बनेगा और इसका नेतृत्व हमारी बेटियां ही करेंगी।

अपने जीवन में लक्ष्य निर्धारित कर मेहनत करें : पटेल

प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने कहा कि विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि विद्यार्थी जीवन में ही अपना लक्ष्य निर्धारित कर उसे प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करें। आप निश्चित ही सफल होंगे। किसी कारणवश अगर आप सफल नहीं होते हैं तो अपनी योग्यता और क्षमता का आंकलन कर उपयुक्त क्षेत्र में आगे बढ़े। इसके बावजूद भी सफलता हासिल नहीं होती है तो अपने माता-पिता के कार्यों में मदद करे। यह आपकी विरासत हैं इसमें आप शत प्रतिशत सफल होंगे। उन्होंने वीर शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, अशफ़ाकउल्ला खान, उद्यम सिंह, चापेकर बंधु इत्यादि वीरों को याद करते हुए कहा कि जिन स्वप्न के लिए इन वीरों ने अपने जीवन का बलिदान दिया हैं उस स्वप्न और संकल्प को पूरा करने की जिम्मेदारी भावी पीढ़ी की हैं। उन्होंने सभी विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य और सुख समृद्धि के लिए शुभकामनाएं दीं।

शिक्षा से हम सपनों को साकार कर सकते हैं : पंडाग्रे

विधायक डॉ.पंडाग्रे ने लैपटॉप की राशि प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि शिक्षा ही वह माध्यम जिससे हम अपने सपनों को साकार कर सकते हैं। हमारे विद्यार्थी इस महत्व को समझकर अच्छे परिणाम हासिल कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी खूब पढ़े और खूब महनत करें। विकसित भारत के निर्माण में भावी पीढ़ी की भूमिका सबसे अहम होगी। छात्रों के जीवन के उत्थान में कोई बाधा न आए इसके लिए मध्यप्रदेश सरकार कृत संकल्पित हैं। विधायक श्री देशमुख ने कहा कि विद्यार्थियों की ज्ञान साधना को बढ़ाने में लैपटॉप उपयोगी साबित होगा। इसके महत्व को समझते हुए मध्यप्रदेश सरकार द्वारा मेधावी छात्रों को लैपटॉप की राशि दी जा रही हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षा ही सबसे बड़ा धन है। जिससे आप अपने जीवन के साथ देश, समाज, धर्म और संस्कृति की रक्षा कर सकते हैं।

मप्र सरकार ने बाधाओं को दूर किया : पंवार

जिपं. उपाध्यक्ष श्री धुर्वे ने आदर्श विद्यार्थी के पांच गुण काकचेष्टा, बकोध्यानम, श्वान निद्रा, अल्पाहारी और गृह त्यागी गुण के महत्व के बारे में जानकारी दी और कविताओं के माध्यम से उन्हें भविष्य की बाधाओं से निपटने के प्रेरित किया। श्री पवार ने कहा कि पहले बेटियों को शिक्षा प्राप्त करने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। लेकिन स्कूल निर्माण, साइकिल वितरण, गणवेश वितरण, लैपटॉप वितरण, स्कूटी वितरण इत्यादि योजनाओं के माध्यम से मध्यप्रदेश सरकार ने इन बाधाओं को दूर किया हैं। जिससे बेटियां न केवल अच्छी शिक्षा ग्रहण कर रही हैं बल्कि हर क्षेत्र में देश को सफल नेतृत्व भी प्रदान कर रही हैं।

बैतूल इन्द्रा कॉलोनी में मादक पदार्थ का बड़ा खुलासा

5 किलो से ज्यादा गांजा सहित चार आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। पुलिस ने मादक पदार्थ बेचने वालों के खिलाफ बड़ी कार्रवाही की है। पुलिस ने इस मामले में 5 किलो से ज्यादा गांजा जब्त कर एक महिला समेत 4 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। उक्त मामले का खुलासा करते हुए एसडीओपी शालिनी परते ने बताया कि मुखबिर से सूचना मिली थी कि इंद्रा कालोनी अवैध मादक पदार्थ बेचने का कार्य किया जा रहा है। सूचना मिलते ही पुलिस टीम ने संदेही गीता यादव के घर पहुंचकर दबिश दी गई। जहां पर महिला गीता यादव एवं शेख खीजर पिता शेख मुनाफ निवासी इन्द्राकालोनी गंज बैतूल मिला। संदेही गीता के घर की तलाशी तो छज्जे पर प्लास्टिक की पन्नी फैली पड़ी थी, उसके नीचे दो काले एवं नीले रंग के बैग देखे। बैग खोलकर देखा तो उसमें अवैध पदार्थ गांजा के 4 बंडल और प्लास्टिक की छोटी-छोटी पन्नी में करीबन 3-5 गम की 50 पुडिया थी। शेख खीजर के कब्जे से 4 पैकेट जो पन्नी में पैक जिनका तोल किया गया, जिनका कुल बजन 5.103 किलो ग्राम मदाक पदार्थ गांजा कीमती करीबन 1 लाख 5 हजार रूपये का मिला। गीता पति स्व. दिनेश यादव उम्र 40 साल निवासी इन्द्राकालोनी गंज बैतूल के कब्जे से एक प्लास्टिक की खुली थैली में रखे मादक पदार्थ गांज थैली में छोटी छोटी 50 पुडियों में भरे हुये मादक पदार्थ गांजा का तौल किया, जिनका वजन 395 ग्राम था, जो कीमती करीबन 7 हजार रूपये का जप्त किया। दोनो आरोपीगणो का कृत्य धारा 8/20 / 29 एनडीपीएस एक्ट के तहत पाये जाने से आरोपीगणो के विरूध्द थाना गंज में धारा 8/20/29 एनडीपीएस एक्ट का पंजीबध्द कर विवेचना में लिया गया है।

आमला से लाया था गांजा

विवेचना के दौरान आरोपी खीजर ने बताया कि अपने भाई राजा के साथ आमला निवासी विकाश से गांजा लाया था। आरोपी विकाश उर्फ विक्की जोगी निवासी आमला ने बताया कि उसने 2 जुलाई को शेख खीजर को 05 किलोग्रम गांजा 15 हजार रूपये में बेचा था। आरोपियों को गिरफ्तार किया गया एवं शेख राजा जो मोटर सायकल से गांजा लेने आमला गया था उससे मोटर सायकल जप्त कर गिरफ्तार किया है। उपरोक्त कार्यवाही में निरीक्षक सरविंद धुर्वे, उनि चित्रा कुमरे, उनि रणधीर सिंह, सउनि उमेश बिल्लोरे, प्रआर रामदास, प्रआर नीलेश, प्रआर संध्या, प्रआर मयुर, आर. अनिरूद्ध, आर. नवीन रघुवंशी आर. रीना, आर. प्रियंका आर. नरेन्द्र, आर. राजेन्द्र आर. बलराम. आर. सुरजीत जाट, आर. देवेन्द्र आर. गजानंद एवं आर. दीपेन्द्र की विशेष भूमिका रही है।

रिश्वत कांड में डॉक्टर सहित पांच नर्सिंग स्टाफ को नोटिस

तीन सदस्यीय डॉक्टरों की टीम कर रही मामले की जांच

बैतूल। जिला अस्पताल में सीजर आपरेशन करने के लिए पांच हजार की राशि लिए जाने का मामला सामने आया है। इस मामले में सिविल सर्जन डॉ. जगदीश घोरे ने महिला रोग विशेषज्ञ डॉ वंदना धाकड़ और पांच नर्सिंग स्टाफ को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। जांच में दोषी पाए गए तो संबंधितों के खिलाफ कार्रवाई की हो सकती है। जानकारी के मुताबिक आठनेर ब्लाक के ग्राम अंधेरबावड़ी निवासी जयदेव सेलुकर ने अपनी शिकायत में बताया कि 29 जून को जिला अस्पताल में प्रसव के लिए पत्नी संगीता को भर्ती किया गया। 1 जुलाई तक प्रसव नहीं हुआ। प्रसव के लिए पांच हजार रुपए की मांग की जा रही थी। पांच हजार देने के बाद सीजर आपरेशन किया गया। जयदेव सेलुकर ने डॉ वंदना धाकड़ पर रिश्वत लेने का आरोप लगाया है। कार्रवाई के लिए आदिवासी युवकों ने गुरुवार शाम को अस्पताल परिसर में प्रदर्शन कर कार्रवाई की मांग की। शिकायत पर सीएमएचओ डॉ मनोज हुरमाड़े ने तत्काल डॉ धाकड़ को मेटरनिटी वार्ड से हटा दिया है। सिविल सर्जन ने इस मामले में डॉ सहित पांच स्टाफ नर्सिंग को कारण बताओ नोटिस जारी किया और रिश्वत मामले में जवाब मांगा है। रिश्वत मामले की जांच के लिए तीन डाक्टरों की टीम बनाई है, जिसमें डॉ परिहार, डॉ रूपेश पदमाकर और शाहपुर के डॉ एसकें रघुवंशी शामिल है। इन तीनों सीनियर डॉक्टरों द्वारा रिश्वत मामले की जांच की जाएगी। यह जांच रिपोर्ट सिविल सर्जन और सीएमएचओ को सौंपी जाएगी। दोषी पाए जाने पर संबंधितों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

सिविल सर्जन ने महिला इकाई का किया निरीक्षण

सीजर आपरेशन के नाम पर पांच हजार रुपए लिए जाने के आरोप लगने के बाद शुक्रवार को सिविल सर्जन डॉ घोरे और आरएमओ डॉ रानू वर्मा ने महिला शिशु चिकित्सा इकाई का निरीक्षण किया और डाक्टरों और स्टाफ को निर्देश दिए हैं कि आपरेशन के लिए महिला और उनके परिजनों को किसी प्रकार से परेशान न किया जाए। किसी भी डॉक्टर और स्टाफ द्वारा परेशान किए जाने की जानकारी सामने आने पर संबंधितों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। भर्ती गर्भवती महिलाओं और

परिजनों से कहाँ गया कि सीजर के नाम पर किसी को भी पैसे न दिए जाए। अस्पताल में निशुल्क आपरेशन किए जाते हैं। अलग-अलग बयानों में उलझी जांच सीजर आपरेशन के लिए रुपए लिए जाने के संबंध में अलग-अलग बयान सामने आने के बाद जांच टीम भी उलझी हुई है। शिकायतकर्ता जयदीप सेलुकर ने सीएमएचओ से की लिखित शिकायत में बताया कि नर्सिंग स्टाफ द्वारा आपरेशन के लिए पांच हजार रुपए लिए गए। जबकि प्रदर्शन के दौरान शिकायतकर्ता ने अधिकारियों से डॉ वंदना धाकड़ द्वारा राशि लिए जाने का आरोप लगाया है। शिकायकर्ता द्वारा कभी नर्सिंग स्टाफ तो कभी डॉक्टर को रुपए दिए जाने की बात कही जा रही है। इसमें जांच भी उलझते दिखाई दे रही है। शिकायतकर्ता के अलग-अलग बयान सामने आ रहे हैं। हालांकि इस मामले की जांच होने के बाद ही सच सामने आएगा।

इनका कहना है –

डॉक्टर और पांच नर्सिंग स्टाफ द्वारा रिश्वत लिए जाने की शिकायत मिलने के बाद उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है और इस मामले की जांच के लिए तीन डॉक्टरों की टीम भी गठित की है।

– डॉ. जगदीश घोरे, सिविल सर्जन, जिला अस्पताल बैतूल

बस और कंटेनर में टक्कर,खिड़कियां तोड़कर यात्रियों को निकाला

•15 से ज्यादा यात्री घायल, कंटेनर चालक फरार, 3 बैतूल रेफर

बैतूल। मुलताई-नागपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर प्रमंडल जोड़ के पास शुक्रवार सुबह 11.20 बजे एक निजी यात्री बस और एक कंटेनर के बीच टक्कर हो गई। इस हादसे में 15 से अधिक बस यात्री घायल हो गए। जिन्हें उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती किया गया है। हादसे के बाद यात्रियों की जान बचाने के लिए उन्हें खिडकियां तोडक़र बाहर निकालना पड़ा। वहीं घटना के बाद कंटेनर चालक मौके से वाहन छोडक़र फरार हो गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार मुलताई से बैतूल जा रही बस हाईवे क्रॉस कर रही थी, तभी नागपुर की ओर से आ रहे कंटेनर ने बस को टक्कर मार दी। टक्कर के बाद बस 20 फीट दूर जाकर सडक़ किनारे की रेलिंग में जा घुसी। कंटेनर 100 फीट तक फिसलता हुआ डिवाइडर पर चढ़ गया। हादसे में कई यात्री सीटों से गिर पड़े। कुछ यात्री टूटे शीशों से घायल हुए। कुछ लोगों को बचाने के लिए खिड़कियां तोडऩी पड़ीं। आसपास के ग्रामीण और दुकानदारों ने घायलों को बाहर निकालने में मदद की। कंटेनर चालक वाहन छोडक़र मौके से फरार हो गया। इस घटना के बाद मुलताई शासकीय और निजी

अस्पताल से गंभीर हालत में राजेश, लोकेश साबले और अल्का उइके को बैतूल रेफर कर दिया है। वहीं अन्य यात्रियों को छुटपुट मामूली चोटे लगी थी, जो अस्पताल नहीं आए हैं। अपने साधन से बैतूल रवाना हुए हैं। इसके पहले सभी घायलों को 108 एंबुलेंस की मदद से मुलताई के शासकीय अस्पताल में एडमिट कराया गया था। अस्पताल में डॉक्टर और नर्सों की टीम तैनात की गई है। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक कंटेनर तेज गति से और लापरवाही से चलाया जा रहा था। पुलिस ने वाहन को कब्जे में लेकर चालक की तलाश शुरू कर दी है।

हादसे में यह हुए घायल: इस हादसे में ललिता पति अनिल निवासी सोनौली, जमुना पति भाऊराव निवासी मुलताई, प्रज्वल पिता नरेंद्र निवासी मुलताई, लोकेश पिता राज कौशल निवासी कामत, अनीता पति मुनिराज निवासी सादाबाद, भारत सिंह निवासी चिकली, राजेश निवासी तिवरखेड़ा, लोकेश साबले निवासी मुलताई, इंदिरा पति श्रीराम निवासी मुलताई, रेखा पति सुनील निवासी सवारी, प्रियांशी पिता राकेश निवासी बैतूल, सरिता पति श्रीराम निवासी पोहा, कमल पिता रंगलाल निवासी बागोड़ा, कल्पना पति विजय निवासी कामत और नंदन सिंह पिता लखन निवासी सुखा खेड़ी घायल हो गये। घायलों का अस्पताल में उपचार जारी है।

प्रभारी मंत्री ने बस दुर्घटना में घायलों से की मुलाकात

लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा तथा जिले के प्रभारी मंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने शुक्रवार मुलताई के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में भर्ती बस दुर्घटना के घायलों से मुलाकात कर उनकी कुशलक्षेम पूछी। इस दौरान मंत्री श्री पटेल ने घायलों का हाल जाना और उन्हें हर संभव बेहतर उपचार दिलाने का भरोसा दिलाया। प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने स्वास्थ्य विभाग द्वारा समय पर घायलों को अस्पताल पहुंचाने और त्वरित उपचार व्यवस्था की सराहना की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि गंभीर घायलों को आवश्यकतानुसार बेहतर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं, ताकि उन्हें शीघ्र स्वस्थ किया जा सके। प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने बस दुर्घटना की विस्तृत जानकारी ली और अधिकारियों को घटनास्थल पर सुरक्षा के सभी वैकल्पिक व्यवस्था किए जाने के निर्देश दिए। ताकि ऐसे हादसों की पुनरावृत्ति दोबारा न हो।

तीन दिवसीय डिवाइन यूथ फोरम (रिट्रीट) का हुआ शुभारंभ

बैतूल। ब्रह्माकुमारीज भाग्य विधाता भवन में मप्र और उप्र के विभिन्न जिलों से पधारी युवा नारी शक्ति समर्पित ब्रह्माकुमारी बहनों का डिवाइन यूथ फोरम (रिट्रीट) का शुभारंभ डॉ.जयदीप पोपली, डॉ.कृष्णा मौसिक एवं डिप्टी डायरेक्टर सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग रोशनी वर्मा के आतिथ्य में शुभारंभ हुआ। इस रिट्रीट को आयोजित करने के लिए सभी युवा बहनों को मोटिवेशन व ट्रेनिंग देने के लिए विशेष अहमदाबाद से नेशनल कोऑर्डिनेटर ब्रह्माकुमारी युवा प्रभाग ब्रह्माकुमारी कृति दीदी पधारी।

इस मौके पर उन्होंने कहा कि युवा एक नई उमंग नई तरंग लेकर क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकते हैं। भाग्य विधाता संचालिका ब्रह्माकुमारी मंजू दीदी ने बताया कि इसमें 100 से भी अधिक युवा नारी शक्ति में भाग लिया जो पूरे मप्र व उत्तर प्रदेश से पधारी है। जिसमें विभिन्न विषयों पर वर्कशॉप, ग्रुप डिस्कशन व एक्टिविटीज के

आधार से युवा शक्ति को मोटिवेट करने के तरीके सिखाए जाएंगे। पुणे से पधारी शीतल बहन एवं सीहोर से पधारे ब्रह्माकुमारी पंचशीला दीदी, जो सभी बहनों को आध्यात्मिक रूप से सशक्त करने के लिए युवा शक्ति के महत्व पर क्लास कराएंगे।

लैंडस्लाइड से जबलपुर-मंडला मार्ग बंद, वाहनों की कतार लगी

नर्मदा नदी का जलस्तर वॉर्निंग लेवल पर पहुंचा; डिंडौरी में स्कूलों की दो दिन की छुट्टी

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में बारिश का स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव है। कई जिलों में बाढ़ जैसे हालात हैं। मंडला में भारी बारिश से नेशनल हाईवे-30 पर लैंड स्लाइड के कारण जबलपुर-मंडला मार्ग बंद हो गया है। यहां नर्मदा नदी का जलस्तर वॉर्निंग लेवल पर पहुंच गया है। जिले के कारिया गांव में पानी ज्यादा भरने से एसडीआरएफ लोगों तक नहीं पहुंच पा रही है। जबलपुर में गैस सिलेंडर से भरा ट्रक नदी में बह गया। डिंडौरी में भारी बारिश के चलते कलेक्टर नेहा माराव्या ने 4 और 5 जुलाई को कलेक्टर ने जिले के सभी हाईस्कूल तक की छुट्टी घोषित कर दी है। जिले की सिवनी नदी का पानी पुल पर आने से जबलपुर-अमरकंटक नेशनल हाईवे बंद हो गया है। नर्मदा नदी में मंदिर डूब गया। टीकमगढ़ में रात 12 बजे से सुबह 7:30 बजे तक भारी बारिश हुई। करीब 8 घंटे में 6 इंच पानी गिर गया। शुक्रवार सुबह जब लोगों की नींद खुली तो घरों में पानी भरा हुआ था। जेल रोड पर आदिवासी गर्ल्स हॉस्टल में पानी भर जाने पर एसडीआरएफ और पुलिस ने छात्राओं का रेस्क्यू किया।

एमपी में आज यहां है बारिश का अलर्ट

मौसम विभाग ने मंडला, सिवनी और बालाघाट में बहुत भारी बारिश की चेतावनी दी है। यहां अगले 24 घंटे यानी, शनिवार सुबह तक 8 इंच या इससे अधिक बारिश हो सकती है। ऐसे में यहां बाढ़ की चेतावनी भी जारी की गई है।

वहीं, जबलपुर, डिंडौरी, छिंदवाड़ा, अनूपपुर, उमरिया, शहडोल, कटनी, मैहर, सतना, रीवा, मऊगंज, सीधी, शिवपुरी, गुना और अशोकनगर में अति भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट है। अगले 24 घंटे में यहां 8 इंच तक पानी गिर सकता है।

ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, दतिया, छतरपुर, पन्ना, सिंगरौली, दमोह, सागर, नरसिंहपुर, राजगढ़, विदिशा, सीहोर, रायसेन, नर्मदापुरम, बैतूल और पांढुर्णा में भारी बारिश का अलर्ट है। भोपाल, इंदौर, उज्जैन, भिंड, निवाड़ी, टीकमगढ़, सीहोर, हरदा, बुरहानपुर, खंडवा, देवास, शाजापुर, आगर-मालवा, खरगोन, बड़वानी, धार, अलीराजपुर, झाबुआ, रतलाम, नीमच और मंदसौर में हल्की बारिश का दौर जारी रहेगा।

जबलपुर में गैस सिलेंडर से भरा ट्रक बह गया

जबलपुर से करीब 30 किलोमीटर दूर ग्राम सलैया में आज सुबह करीब 11.30 बजे गैस सिलेंडर से भरा एक ट्रक डूब गया। ड्राइवर को मना करने के बावजूद वह पानी में से ट्रक निकाल रहा था। लेकिन तेज बहाव में ट्रक बहने लगा। चालक और उसका साथी नदी में कूद गए। देखते ही देखते ट्रक बह गया। पुल पर पानी कम होने के बाद क्रेन की मदद से ट्रक को बाहर निकाला जाएगा। ट्रक जबलपुर से बरेला होते हुए कुंडम की तरफ जा रहा था।

बालाघाट में सड़क पर गिरा पेड़

बालाघाट में लामटा मार्ग पर एक पेड़ सड़क के बीचोंबीच गिर गया। यहां सुबह 10 बजे से रास्ता बंद है। प्रशासन रास्ता खुलवाने का प्रयास कर रहा है।

मंडला के माधोपुर में 5 लोगों का रेस्क्यू

मंडला के माधोपुर में एसडीईआरएफ ने 5 लोगों का रेस्क्यू किया। सभी को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया है।

कटनी में मूसलाधार बारिश, घरों में दो फीट तक पानी भरा

कटनी जिले की रीठी तहसील में सुबह करीब चार बजे से मूसलधार बारिश हो रही है। यहां शिवनगर के 25 घरों पर दो फीट तक पानी भर गया। लोगों का कहना है कि सड़क के किनारे नाली नहीं बनाने के कारण ये हालात बने हैं। अब सड़क काटकर पानी निकालने का प्रयास किया जा रहा है।

ओबीसी आरक्षण पर सुप्रीम कोर्ट का एमपी सरकार से सवाल

13 प्रतिशत पद होल्ड हैं, इन पर नियुक्तियों में क्या दिक्कत है; मुख्य सचिव से एफिडेविट मांगा

भोपाल (नप्र)। एमपी में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण लागू करने की मांग पर सुप्रीम कोर्ट में शुक्रवार को सुनवाई हुई। कोर्ट ने मध्यप्रदेश के मुख्य सचिव से एफिडेविट मांगा है कि जो 13 प्रतिशत पद होल्ड हैं, उन पर नियुक्तियों में क्या दिक्कत है। सरकार ने साल 2019 में ओबीसी को 27 प्रतिशत आरक्षण देने के लिए एक्ट पास किया गया था, लेकिन अमल में नहीं आ पाया। कोर्ट नंबर 12 में जस्टिस पीएस नरसिम्हा और जस्टिस आर महादेवन की बेंच ने सुनवाई की। यह केस सीरियल नंबर-35 पर लगा था। याचिकाकर्ता ओबीसी महासभा की ओर से एक बार फिर से मप्र की 51 प्रतिशत ओबीसी होने की दलील दी गई। मामले में मप्र हाईकोर्ट से ट्रांसफर होकर करीब 70 याचिकाएं सुप्रीम कोर्ट में पहुंची हैं, उन्हीं पर आगे सुनवाई होगी। तत्काल आरक्षण देने संबंधी इस याचिका में अभी कोई राहत नहीं मिली है।

ओबीसी आरक्षण वाले मामले में सरकार का पक्ष

13 प्रतिशत होल्ड पदों पर ज्वाइनिंग देने मामले में जो याचिका लगाई गई है उसमें आज कोर्ट ने बहस के दौरान कहा कि पहले से 50 से ज्यादा याचिकाएं कोर्ट में विचाराधीन हैं तो इस पिटिशन पर सुनवाई की जरूरत नहीं है। इस पर याचिकाकर्ता के वकील

ने कहा कि 27 प्रतिशत ओबीसी आरक्षण के मामले में कोई कानूनी रोक नहीं है। मध्य प्रदेश सरकार के विभिन्न विभागों में 27 प्रतिशत के हिसाब से विज्ञापन जारी किए गए थे, लेकिन भर्ती में 13 प्रतिशत पद होल्ड हैं। ऐसे में इस याचिका को सुना जाए। इस पर कोर्ट ने मध्यप्रदेश सरकार से जवाब मांगा है। सरकार के वकीलों का कहना है कि सीएस से जवाब मांगना एक रूटीन प्रोसेस है। इसमें 13 प्रतिशत में क्या दिक्कत है, ये दूसरे पक्ष के वकील गलत इंटरप्रेट कर रहे हैं। कोर्ट ने तो याचिका को मुख्य याचिका के साथ सुनवाई करने की बात कही थी। सरकार की ओर से कहा गया कि सरकार ओबीसी वर्ग को 27 प्रतिशत आरक्षण दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है। लेकिन याचिकाओं का सुप्रीम कोर्ट से निराकरण हो जाए ताकि फिर कोई अड़चन न आए।

भोपाल रेप-ब्लैकमेलिंग केस

- एनएचआरसी की सीएस-डीजीपी को चिट्ठी
- पीड़ित छात्राओं को 5-5 लाख दे सरकार, लापरवाह अफसरों पर हो विभागीय कार्रवाई

भोपाल (नप्र)। भोपाल के एक निजी कॉलेज में पढ़ने वाली छात्राओं के साथ दुष्कर्म, ब्लैकमेलिंग और जबरन धर्म परिवर्तन कराने के मामले में राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग ने मध्यप्रदेश सरकार और पुलिस पर गंभीर सवाल उठाए हैं। आयोग ने मुख्य सचिव और डीजीपी को निर्देश दिए हैं कि इस पूरे मामले की निष्पक्ष और विस्तृत जांच कराई जाए और जांच में लापरवाही बरतने वाले अफसरों पर विभागीय कार्रवाई की जाए। आयोग ने यह भी कहा है कि मुख्यमंत्री सहायता कोष से पीड़ितों को जो 50 हजार रुपए की राशि दी जा रही है, वह नाकाफी है। हर पीड़िता को 5-5 लाख रुपए की अंतरिम राहत दी जानी चाहिए। एक नाबालिग पीड़िता को 6 लाख रुपए देने का निर्देश भी दिया गया है।

दोस्ती, रेप, वीडियो और फिर धर्मांतरण का दबाव: राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग को मिली शिकायत के अनुसार, भोपाल के एक निजी कॉलेज में कुछ छात्राओं को पहले दोस्ती के जाल में फंसाया गया, फिर उनके साथ दुष्कर्म किया गया। उनके अश्लील वीडियो बनाकर ब्लैकमेल किया गया और फिर धर्म बदलने और निकाह करने के लिए दबाव बनाया गया। पीड़ित छात्राओं ने यह भी आरोप लगाया है कि आरोपी लड़कों ने अपनी असली पहचान छिपाकर दोस्ती की थी।

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष हंसराम भोपाल में

एमपी की 32 जातियों को केंद्रीय पिछड़ा वर्ग सूची में शामिल करने पर कर रहे जनसुनवाई

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश की पिछड़ी जातियों को केन्द्र की सूची में शामिल करने को लेकर शुक्रवार को राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग ने भोपाल में सुनवाई की। इस दौरान प्रदेश में पिछड़ा वर्ग में शामिल 32 जातियों के प्रतिनिधियों ने आयोग के समक्ष अपनी जातियों का इतिहास

बताकर राष्ट्रीय सूची में शामिल करने को कहा। इनका कहना था कि राष्ट्रीय सूची में नाम शामिल नहीं होने से उनकी जाति के लोगों को राष्ट्रीय स्तर के आरक्षण का लाभ नहीं मिल पाता है। राजधानी के वीआईपी स्टेट गेस्ट हाउस लालघाटी के सभागार में हुई सुनवाई में राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष हंसराज गंगाराम अहीर, सदस्य भुवन भूषण कमल के अलावा राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष डॉ. रामकृष्ण कुसमारिया एवं सदस्य सीताराम यादव भी शामिल हैं। इसके अलावा पिछड़ा वर्ग विभाग के अधिकारी भी सुनवाई में शामिल होकर आयोग के निर्देशों पर अमल के लिए तैयारी कर रहे हैं। राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के सचिव देवेश मिश्रा ने बताया कि राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग नई दिल्ली द्वारा मध्यप्रदेश राज्य की पिछड़ा वर्ग की 32 जातियों को लेकर यह सुनवाई की जा रही है। इस जाति के लोग खुद को केंद्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग की सूची में शामिल कराना चाहते हैं।

इन जातियों ने की केंद्रीय सूची में शामिल होने की मांग

पिछड़ा वर्ग की जिन जातियों के प्रतिनिधियों ने अपनी जाति को केंद्रीय सूची में शामिल करने की मांग रखी है उसमें दवेज, भोपा मनभाव, दमामी, हरिदास, कोहरी, फूलमाली (फूलमारी), कलार, जायसवाल, डउसेना, लोढ़ा (तंवर), गोलान, गौलान, गवलान, जादम, कुडमी, रूआला- रूहेला, अब्बासी के साथ सक्का, घोषी गवली और गोली शामिल हैं। इनके अतिरिक्त लिंगायत, महाकुल (राउत), थारवार, जमना लोधी, मनधाव डूकर, कोल्हाटी, घड़वा, झारिया, वोवरिया, मोवार, रजवार, सुत सारथी, तेलंगा, तिलंगा, गयार-परधनिया, बया महरा- कौशल, वया थोरिया, खरादी, कमलीगर, संतराम, शेख मेहतर को केन्द्रीय पिछड़ा वर्ग सूची में शामिल करने को लेकर जनसुनवाई की जा रही है।

दीपावली के बाद बहनों को हर महीने देंगे 1500 रुपए : मुख्यमंत्री

*** बहनों को रक्षाबंधन में मिलेगा 250 रुपये का शगुन * सिंगरौली को जल्द मिलेगी मेडिकल कॉलेज की सौगात * 503 करोड़ रुपए से अधिक लागत वाले 54 कार्यों का हुआ लोकार्पण एवं भूमि-पूजन**

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि सिंगरौली प्रदेश का सीमावर्ती, खनिज सम्पन्न और सर्वप्रिय जिला है। सिंगरौली को शीघ्र ही मेडिकल कॉलेज की सौगात मिलने वाली है। अगले साल से यहां पढ़-लिखकर डॉक्टर निकलेंगे। आज प्रदेशभर के 94 हजार 234 प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को लैपटॉप की राशि ट्रांसफर की गई है। इसमें 60 प्रतिशत छात्राएं और 40 प्रतिशत छात्र शामिल हैं। राज्य सरकार जनजातीय अंचल में सभी वर्गों के लिए कल्याणकारी योजनाएं संचालित कर रही है। बीते 2 साल में प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को 15 हजार से अधिक स्कूटी बांटी गई हैं। हमारी सरकार सबके चतुर्दिक विकास के लक्ष्य की ओर अग्रसर है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को सिंगरौली जिले के सरई गांव में महिला सशक्तिकरण तथा जनजातीय गौरव सम्मान समारोह को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गुरु हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। कुछ दिनों बाद 10 जुलाई को गुरु पूर्णिमा है, इस दिन प्रदेश के सभी स्कूल-कॉलेज, हॉस्टल सहित बच्चों की सुविधा से जुड़े निर्माण कार्यों का एक साथ लोकार्पण होगा। शासकीय स्कूलों के बच्चों को साइकिल, ड्रेस और किताबों का वितरण भी किया जाएगा। भागवत गीता से मध्यप्रदेश का संबंध है। वृंदावन ग्राम बनाकर भगवान श्रीकृष्ण-सुदामा की मित्रता को जीवंत करना है। बच्चे पढ़ाई करके कहीं भी जाएं, पर अपने गरीब मित्र को न भूलें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विपक्षी दल की सरकार के समय प्रदेश में बेटे-बेटियों के लिंगानुपात में बड़ा अंतर था। हमारी सरकार में लाड़ली बेटी जन्म से ही लखपति हो, इसकी शुरुआत मध्यप्रदेश से हुई। बेटियाँ जब 18 वर्ष की उम्र पूरी करेंगी, तो सरकार की ओर से उन्हें एक-एक लाख रुपए से अधिक राशि दी जाएगी। राज्य सरकार लाड़ली बहनों और स्व-सहायता समूहों की महिलाओं को और अधिक सशक्त करने के लिए कार्य कर रही है। पहले प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय मात्र 11 हजार थी, लेकिन अब हमारी सरकार के प्रयासों से यह 1 लाख 52 हजार रुपए हो गई है। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन से पहले सभी पात्र बहनों को 250 रुपए की अतिरिक्त राशि शगुन के रूप में भेजी जाएगी। दीपावली के बाद हम प्रदेश की सभी लाडली बहनों को हर माह 1500 रुपए महीना देंगे। उन्होंने कहा कि बहन-बेटियों के हाथ में पैसा रहे तो घर ठीक से चलता है।मुख्यमंत्री ने कहा कि आदिवासियों के सम्मान और गरीबों के कल्याण के लिए सरकार लगातार प्रयास कर रही है। हमने रानी दुर्गावाती और राजा भभूत सिंह की स्मृति में कैबिनेट की बैठक भी आयोजित की है। श्रीअन्न खरीदने पर किसानों को एक हजार रूपये प्रति क्विंटल अतिरिक्त राशि दी जा रही है। किसानों से 26 सौ रूपये प्रति क्विंटल में गेंहू की खरीद की गई जो देश में सर्वाधिक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारी सरकार ने 27 हजार करोड़ से अधिक की बजट राशि महिलाओं को समर्पित की है। लाड़ली बहना योजना के लिए 18 हजार करोड़ से अधिक का प्रावधान रखा है। आज प्रदेश में 51 लाख से अधिक लाड़ली बेटियां पंजीकृत हैं इनमें से 12 लाख 99 हजार बेटियों को 672 करोड़ की छात्रवृत्ति दी जा रही है।

मुख्यमंत्री की महत्वपूर्ण घोषणाएं- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सरई में कहा कि सिंगरौली में भरपूर कोयला एवं अन्य खनिज संपदा उपलब्ध है। यहां 4 लेन सड़क बनाई जाएगी। माडा अस्पताल को अपग्रेड कर सीएचसी बनाया जाएगा। सरई में उपखंड कार्यालय, बरगवा-परसवा में 52 किलोमीटर लंबी 4 लेन सड़क बनाई जायेगी। सरई में 100 बेड के नये अस्पताल की स्थापना के लिए सर्वे कराया जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सिंगरौली को हवाई सेवा से भी जोड़ा गया है। हमारी सरकार ने जरूरतमंदों को बेहतर इलाज के लिए एयर एंबुलेंस उपलब्ध कराई है। मृत्यु के बाद शव को अस्पताल से घर तक छोड़ने के लिए सभी जिलों में शव वाहन की सुविधा शुरू की जा रही है। राज्य सरकार ने देहदान/अंगदान को प्रोत्साहित करने के लिए अंगदान और देहदान करने वालों को राजकीय सम्मान के साथ अंतिम विदाई दिए जाने का निर्णय किया है। अंगदान से किसी दूसरे जरुरतमंद व्यक्ति को नया जीवन मिल जाता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जनजातीय गौरव सम्मेलन में शासकीय योजनाओं से लाभान्वित जनजातीय वर्ग के चार व्यक्तियों श्री महाबली सिंह, श्री शंकर सिंह पनिका, श्री वंश बहादुर सिंह और श्री दयाल सिंह का मंच से सम्मान किया। कार्यक्रम में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री तथा सिंगरौली जिले की प्रभारी मंत्री श्रीमती सम्पतिया उईके, पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्रीमती राधा सिंह, क्षेत्रीय सांसद श्री राजेश मिश्रा, विधायक श्री राजेंद्र मेश्राम, विधायक श्री कुंवर सिंह टेकाम, विधायक श्री विश्ममित्र पाठक सहित जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित थे।

सिंगरौली को मिली 503 करोड़ रुपए के निर्माण कार्यों की सौगात- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सरई में हुए सम्मेलन से सिंगरौली जिले को 503 करोड़ 9 लाख 19 हजार रुपए के 54 निर्माण कार्यों की सौगात दी। मुख्यमंत्री ने 104 करोड़ 67 लाख 26 हजार रुपए की लागत के 20 निर्माण कार्यों का लोकार्पण तथा 398 करोड़ 41 लाख 93 हजार रुपए की लागत के 34 निर्माण कार्यों का शिलान्यास किया।

महिला बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया से शुक्रवार को उनके निवास पर भोपाल की बालिका गृह की प्रथम एशियन चेस चैंपियनशिप फॉर फ्रीडम की स्वर्ण पदक विजेता बच्चियों ने मुलाक़ात की

शॉपिंग मॉल, बाजार-कारखानों में रात में काम कर सकेंगी महिलाएं

एमपी सरकार ने दी सशर्त मंजूरी ; सुरक्षा की व्यवस्था नियोक्ता को करनी होगी

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में शॉपिंग मॉल, बाजार और कारखानों, प्रोडक्शन यूनिट्स में अब महिलाएं भी दिन-रात काम कर सकेंगी। राज्य सरकार ने शर्तों के साथ महिलाओं के रात में काम करने की सहमति दे दी है। इसके लिए महिलाओं की सुरक्षा से संबंधित प्रोटोकॉल का पालन नियोक्ता (एम्प्लॉयर) एजेंसी को करना होगा। सरकार का मानना है कि इस फैसले से महिला कर्मचारियों को आर्थिक प्रगति मिलेगी। वहीं कारोबारियों और उद्योगपतियों को अपने यूनिट्स का कारोबार बढ़ाने में मदद मिलेगी, जिसका असर प्रदेश के विकास को बढ़ावा देने वाला होगा।

शॉप में 10 या ज्यादा महिलाएं होनी चाहिए नियुक्त: दुकान और स्थापना अधिनियम, 1958 में किए गए संशोधन के आधार पर श्रम विभाग ने निर्देश जारी किए हैं कि रात 9 बजे से सुबह 7 बजे तक महिलाएं काम कर

सकेंगी। जहां महिलाएं रात में काम करेंगी, उस शॉप या शोरूम में कम से कम 10 या अधिक महिलाएं नियुक्त होनी चाहिए।

कारखानों में एक-तिहाई कर्मचारी होना अनिवार्य: कारखानों के मामले में भी इसी तरह की व्यवस्था रहेगी। कारखाना अधिनियम की शक्तियों का उपयोग करते हुए 26 जून 2016 के नियमों को समाप्त कर यह तय किया है कि महिलाएं चाहें तो रात 8 बजे से सुबह 6 बजे तक किसी कारखाने या प्रोडक्शन यूनिट में काम कर सकती हैं। कारखानों और प्रोडक्शन यूनिट्स में महिलाओं के रात्रि शिफ्ट में काम करने के दौरान सुपरवाइजर, शिफ्ट इन-चार्ज, फोरमैन या अन्य सुपरवाइजर कर्मचारियों में कम से कम एक तिहाई महिला कर्मचारी होना चाहिए।

फेडरेशन चेंबर ऑफ कॉमर्स ने कहा- सुरक्षा जरूरी

फेडरेशन चेंबर ऑफ कॉमर्स भोपाल के प्रदेश उपाध्यक्ष कैलाश अग्रवाल ने सरकार के फैसले को लेकर कहा कि महिलाओं की सुरक्षा सबसे जरूरी है। अगर वे रात में ड्यूटी करेंगी, तो उनके अनुसार पूरी व्यवस्था होना चाहिए। यदि रात में उन्हें छोड़ा जाना है, तो उन्हें घर तक सुरक्षित पहुंचाने की व्यवस्था अनिवार्य होनी चाहिए। इससे कारखानों, प्रोडक्शन यूनिट्स और दुकानों के संचालकों को तो लाभ होगा ही, साथ ही महिलाओं और उनके परिवारों को भी आर्थिक व सामाजिक संबल मिलेगा।

सामाजिक समरसता कार्यक्रम

सायं 6:00 बजे | दत्तोपंत ठेंगड़ी सभागार, कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर

विकास कार्यों का भूमिपूजन एवं लोकार्पण

अपराह्न 4:00 बजे | आई एस बी टी, ग्वालियर

मुख्य अतिथि

डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

गरिमामयी उपस्थिति

ज्योतिरादित्य सिंधिया
केन्द्रीय मंत्री, संचार एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास

नरेन्द्र सिंह तोमर
अध्यक्ष, मध्यप्रदेश विधानसभा

5 जुलाई, 2025

समरस समाज की स्थापना के सतत प्रयास

डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जन्मभूमि महू, महानिर्वाण स्थल दिल्ली, दीक्षा भूमि नागपुर, चैत्य भूमि मुंबई और शिक्षा स्थल लंदन 'मुख्यमंत्री तीर्थदर्शन योजना' में सम्मिलित

महू को अंतर्राष्ट्रीय स्थल के रूप में विकसित करते हुए **अम्बेडकर इंटरनेशनल रिसर्च सेंटर एवं स्मारक संग्रहालय** का विकास एवं महू रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर हुआ **अम्बेडकर नगर स्टेशन**

- डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना - स्व-रोज़गार के लिए डेयरी इकाई लगाने हेतु ₹42 लाख तक ऋण
- डॉ. भीमराव अम्बेडकर आर्थिक कल्याण योजना - अनुसूचित जाति के युवाओं को ₹1 लाख तक की स्व-रोज़गार अनुदान सहायता
- डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर उद्योग उदय योजना - एमएसएमई क्षेत्र में अनुसूचित जाति-जनजाति उद्यमियों को वित्तीय सहायता
- अम्बेडकर गौ-शाला विकास योजना - आधुनिक गौ-शालाओं हेतु 125-150 एकड़ शासकीय भूमि आवंटन
- डॉ. भीमराव अम्बेडकर मेधावी विद्यार्थी पुरस्कार योजना - अनुसूचित जाति के मेधावी विद्यार्थियों को 10वीं-12वीं में सर्वोच्च अंक लाने पर ₹30 हजार का पुरस्कार
- डॉ. भीमराव अम्बेडकर छात्रवृत्ति योजना - अनुसूचित जाति के मेधावी विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति एवं अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन हेतु अम्बेडकर फैलोशिप
- भोपाल में मध्यप्रदेश के सबसे लंबे फ्लाईओवर का नाम डॉ. अम्बेडकर के नाम पर रखा गया
- डॉ. बी.आर. अम्बेडकर वन्यजीव अभयारण्य - सागर में 258.64 वर्ग कि.मी. में प्रदेश का 25वां अभयारण्य

सीधा प्रसारण webcast.gov.in/mp/cmevents @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @jansamparkMP JansamparkMP

D-11058/25